A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 432 Subject Kavya

Name of MSS Rasik Priya

Author Kesavadasa

Period Folios 132

Script Devnagiri Source Bala Sahai Shastri, Alwar, Rajasthan

Missing Folios —

(६)

रसिकप्रिया

केशवदासकृत

432

432

(६)

रसिकप्रिया
केशवदास कृत

Hindi Ms 8 HI		
R224 432		रसिकप्रिया ; केशवदास कृत ; नारायणपुर के लाला गोबिन्द चन्द ने दीप चन्द लिपिकार द्वारा ६ माघ, कृष्ण पक्ष, १८८७ वि० १७५२ श॥ लि० ६६ पत्रक ॥ ले० ७० २१ पं० प्र० पृ० ह० ले०

...त ... ...रुनौ॥ नम॥ स्यारस
सारसु ह... ...रुनौ॥ नम॥ स्यारस
क प्रिया ... बखानि॥ छप्पै॥ एकरदनगज
वदनसदनबुधि मदनकदनसुत॥ गवरि
नंदआनंदकंदजुगबेदचंदजुतसुखदा
यकदायकसुकृतिगएनाइकनाइक
खलघायकघाइकदलिदुदहनाइक
नाइक॥ गुरगनकसनंतभगवंतभवसा
क्तिवंतभवभयहरन॥ जयकेसावदास
निवासनिधिलंबोदरअसरनसरन॥ १॥
दूहा छंदः॥ श्रीवृषभानकुमारिहेतश्रृं
गाररूसमय॥ बासहासरसहेरमातुबंधन
करुणामय॥ केसीप्रतिअतिरौद्रबीरमा
ख्योबकासुर॥ भयदावानलपानपीयो
बीभत्सबकीउर॥ आतिअद्भुतबीरबिरं
चिमतिशांतिशंततिशोचचितकहिके
शवसेबहुरसिकजननवरसमेव्रजि
राजनिति॥ २॥ दोहा॥ नदीबेतिबेतर
नहातीरउतुंगारण्य॥ नगरओडछोब
हुविधिबसेधरनीतलमेधारण्य॥ ३॥ श्र
मचारिबसेजहाच्यारिबर्नसुभकर्म
जपतपविद्याबेदविधिसबैबढैधनधर्म

रस० २ 2

४॥ अपनैं अप...
जासों देस विदेस के ... म महारि॥५
दिन प्रति तिनहू नै बढे सदा दया अरु दान
तिह पुर कासी मिश्र सुत केसवदास सुजान
६॥ रच्यो बिरंचि विचार तहां नृप मनि मधुक
र साहि॥ गहरवार कासीसुवर कुल मंडण
जस ताहि॥७॥ ताको पुत्र प्रसिद्ध है मंडन दू
इलनहराम॥ ईंद्रजीत ताको अनुज सकल
धर्म को धाम॥८॥ दीन्ही ताहि नृपेह जू तन
मन बर जप सिधि॥ हित करि लछमन राम जू
भई राजसौं वृधि॥९॥ तिन कवि केसवदास
सों कस्यो धर्मसों नेह॥ सब सुख दै कै यों क
ह्यौ रसिकप्रिया करि देह॥१०॥ अति रति गति
मति एक करि बिबिधि बिबेक बिलास॥ रसि
कन कौं रसिकप्रिया कीन्ही केसवदास॥११
संबत सोरासै बरस॥ बीते अठतालीस॥ का
तिग सुधि तिथि सपतमी बार बरन रजनीस
१२॥ ज्यौं बिन दीठ न सोभिजे लोचन लोल
बिसाल॥ त्यौंही केसव सकल कवि बानी
बिना रसाल॥१३॥ तातें रुचि सौं सोचि पचि
करिये सरस कबित्त॥ केसव स्याम सुजान

महि

1648 f

[illegible]ति[illegible]न ॥ २४ ॥ प्रथमसिं
गारसह[illegible]रुनारौद्रसबीर ॥ भय
बिभत्सतवबानिए सांतनतअद्भुतधीर ॥
२५ ॥ नवरसकेतोभावनहुतिनकेभिन्न
विचारु ॥ सवकोकेसवदासकहिनाइक
हैसिंगारु ॥ २६ ॥ सिंगारबरनन ॥ दोहा ॥ र
तिमतिकीअतिचातुरी । रतिपतिमंत्रवि
चार ॥ ताहीतेसबकहतहैकबिकोबिदसिं
गार ॥ २७ ॥ रतिहासीअरुसोकपुनिक्रोधउ
छाहसुजान ॥ भयनिंदाबिसमयसदाये
थितिभावप्रमान ॥ २८ ॥ सुभसंजोगवियो
गएहेसिंगारकीजाति ॥ पुनिप्रछन्नप्रका
सकरिएतुहैहैभांति ॥ २९ ॥ अथप्रछन्न
संजोगश्रृंगार ॥ दोहा ॥ सोप्रछंनसंजोग
कबिकहैविवेकप्रमान ॥ जानैप्रियप्रिया
कीसखीहोयजुतिनहीसमान ॥ ३० ॥ सवै
या ॥ बनमेंवृषभानुकुमारिमुरारिरमैरु
चिसोंरसरूपपिए ॥ कलकुंजितपुंजित
कामकलाविपरीतिरचीरतिकेलिकि
ये ॥ मनिसोहतस्यामजराववरीअति
चोकिचलेचलचारहिये ॥ मघतेलके

रस-
२
श्लोक १
४

घल मुलावत नव... दलियै ॥२१॥ अथ प्रका... गसंवियोगसिंगार ॥ दोहा ॥ सप्रकाससंजोग ज्यों कहौ प्रकासवियोग ॥ आपने आपने चित्त मे जानै सगरो लोग ॥२२॥ सवैया ॥ केसव येक समे हरि राधिका आसन एक लसे रसभीनै ॥ आनद सौं त्रिय आनद की दुति देषत दर्पन त्यौं द्रग दीनै ॥ भाल के लाल मे बाल बिलोकित ही भरि लोचन लालन लीनै ॥ सासन पीय सबासन पीय हु तासन मे मानु आसन कीनै ॥२३॥ राधिका जी को प्रछिन विजोग ॥ सवैया ॥ कीट ज्यौं कारत कानन कान जो मास हू मे कहि आवत ई नो ॥ नाहि चले सुनि के चुप है रहे नीके है केसव एकन दूनो ॥ नैक आटे पट फूटि त आंछि सु देषत हू कबको व्रज सूनो ॥ काहे कों काहु की जे परे सारी जो जल जीव के नांदि दे दूनो ॥२४ राधाजी को प्रकास विजोग सिंगार ॥ सीतल समीर टारि चंद्र चंद्रिका नि वारि के सो दास ऐसे ही तो हर षहिरात है ॥ फूलन फेलाय डारि जारि डारि घनसार चंदन च ढाये चित्त चोगनो पिरात है ॥ नीरहीन मीन

...त ...आरही पिछीर हूके छिरके
कहा ध... धरातु है॥ पाई है तै पीरकि
धौं याही उपचार करै आगि को लादा धौं
अंग आगि ही सिरातु है॥ २५॥ कृस्न को प्र
छन्न वियोग शृंगार॥ सवैया॥ केशव रू
चि रहे मही सो कि धौ भय काहू के भी मभ
ए है॥ वे च्चा है काहू के हाथि कि नाथ कि
धौं तुम काहू को साथि दियो है॥ मेरी सौं
स मोहु मौन हू वे जिरे ह्या मनु नाहि कहा प
ठयो है॥ साची कहौ हरि हारे हौ काहू सौं
काहू हस्यो कि हिरायो गयो है॥ २६॥ कृस्न
को प्रकास वियोग सिंगार॥ सवैया॥ बात
सुनै न कहै कछु काहे सौं हेरै न ही काइ को
हूके से ही हरो॥ खाय कछु न पिवै कछु
के प्राइ छुवै न कछु कर को रै करै रो॥ फू
लि उठी व्रजि वे हि कहा उठि आवहि देखि
कहौ करि मेरो॥ जानै को इसाइ कहा भयो
कान्ह हियोग संयोग वियोग कि तेरो॥ २७
॥ दोहा॥ जो प्रकास प्रछन्न सबै प्रबरनै
जोग विजोग॥ अब बाइक लछन कहत
सठ अगूढ प्रयोग॥ २८॥ सुभग सवैया

३
अथ करि पुनि दोहा इकथ...
सप्रभाव में रसिकप्रिया के ... ॥ इति
श्रीमन्महाराजिकुमार इंद्रजीत विरचि
तायां रसिकप्रियायां प्रछन्नप्रकास संयो
गसृंगार बरननं नाम प्रथमप्रभाव॥ १॥
अथ नाइक लछन॥ दोहा॥ अभिमानी त्या
गी तरुन केलि कलानु प्रवीन॥ भव्य छमी सुं
दर धनी सुचि रुचि सदा कुलीन॥ १॥ ए गुन
केसव जासमे सोई नाइक जानि॥ अनुकू
ल दछिन धृष्ट सठ चोबिधि ताहि बषानि॥ २॥
अथ अनुकूल लछिन॥ दोहा॥ प्रीति करै
निज नारि सों परनारी प्रतिकूल॥ केसव म
न बच कर्म करि सो कहिये अनुकूल॥ ३
प्रकास अनुकूल लछिन॥ मेरे तो नाहिन
चंचल लोचन नाहिन केसव बानी सुहाई
जानै न भूषन भेद के भावनि भूलि हु मैन
हि भौंह चढाई॥ भोरै हु नाचति यो हरि बी
र सु घेरो करै इहि भांति लुगाई॥ रंचक तो
चतुराई न चित्त मे कान्ह भयो बस काहे ते
माई॥ ४॥ सवैया॥ केसव सूधे बिलोचन
सूधे निलोकन कौं अवलोक सदाई॥ सू
धीही हासि सुधानिधि सो मुख सोधित

7

...सुधाई। सधीये बात सुनै सखिऊ का ...आवत सधीए बात सुहाई॥ सुधे स्वभाव सनैस जनी नसि कैसे किहें जाति टटे कन्हाई॥ ५॥ प्रछन्न अनुकूल सवैया॥ ओर के हास विलासन भावत साधुन कोय हसिद्ध सुभावे। बातन हे जु सदा निबहे हरि कोउ कहो कछु साधन पावे। आसन बास सुबासन भूषन केसव क्यु हू द्वे हे वनि आवे। आविन पावन बात जु कान्ह सो बैर कि घोह ह प्रीति कहावे॥ ६॥ अथ दक्षनायक लछिन॥ दोहा॥ पहलो सो हियहे लडर सह जबड़ाई कानि। चित्त चले हू नातजे दक्षन लक्षन जानि॥ ७॥ प्रसछन लछिन॥ सवैया॥ हरि नेहनि सो भ्रमभूलि हून कीजे मनु होतो करि ही यह ते होत हित ...हानिए। तो कमे असलो कमानि नीके हू को लागत है सीता जके दूत गीत कैसे उर आनिये। देख बनि बाल कैसे साची होत केसव दास कानन की सुनी साची कव हू न मानिए। गोकल की कुलटाये यों ही उलटावत है। आज लौं तो वैसे है है कालि कीन जानिए।

नि

४ 8

८॥ सवैया॥ बहिअंतर गूढ [torn] निरंतर
काम कला कुल कौन गिनै॥ कहि के
सब हास विलास सबै प्रतिद्यौस बढै रसि
रासि सनै॥ जिन कौ जिय मेरे ही जीय
जिये सखि काय मनौ बच प्रेम घनै॥ तिन
सौ कहि आनबधू के आधीन है सांप
रतीक किधौ सुपनै॥ ९ ॥ प्रकास दो
गलदिण॥ सवैया॥ चित चोप चितै बे
की तैसीय है अरु तैसीय भांति सुहाति मनै
अरु तैसीय कोमल बोल गोपाल के मोह
न है तिह भांति मनै॥ गुन तैसेहि हास विला
स सबै हु तै जैसे ही के सब कौन गिनै॥ स
खि तू कह आनि बंधू के अधीन है सांपर
तीक किधौ सुपनै॥ १०॥ सठलछन॥ दो
हा॥ मुह मीठी बातै कहै निपट कपट जि
य जानि॥ जाहि न डर अपराध को सठ करि
ताहि बषानि॥ ११॥ अथ प्रछन सठ लछ
न॥ रुचि पंकज चंद न बंदन कंचन रंच
न रोचन हू की वची॥ कहिए कहि कार
ए कौ इत लाहक का पर भामिनि भौह
चनी॥ वनमान तहौं अखियाल खिला ४

...तिकेरो सरची ॥ तनु तेरे
वियोग ... तरुनी तिहि मानहु मो
हिय माहित ची ॥ १२ ॥ धष्ट लछन ॥ दोहा
लाज न गारि हू मारि की छो डि देइ सव त्रा
स ॥ देष्यो दोषन मान ही धष्ट सु केसव दा
स ॥ २३ ॥ अथ प्रछंन धष्ट ॥ सवैया ॥ नेह
भरे ल्लेल्ले भाजत भाजत कोन गनै दधि दू
ध मठाये ॥ गारि दिये ते हसै बर जै घरि
आवत है जान्यें बोल पठाये ॥ लाज
की ओर कहा कहों केसव जे सुनिये ते
सबे गुन गाये ॥ मामी पिवै इनकी मेरी
माय कोहे हरि आठ हु गांठि अठाये ॥ २४
दोहा ॥ मनसा बाचा कर्मना विहसिन
चित्त वनिले षि ॥ चलनि चातुरी आतुरी
आठो गांठि बसेषि ॥ २५ ॥ प्रकास धष्ट
सोहत कोस च सकोच न पाव को डोल
त साह भए करि चोरी ॥ बैननि बंचक
ताइ रची रति नैननि केस गिल्ला गत डो
री ॥ लाज कै रन डरे हित हानि सों आ
नि औरे त्रिय जानि के भोरी ॥ नाही मे
केसव साषि जिनै बकि सै सिने स्यों दु

रस. ५

षवैमुषकोरी॥ ७ ॥दोहा॥ [illegible]
नाइकसवैनाइकाइहैअनु[illegible]॥सठगु
नत्नायकनाइकासुनिअबवहोतप्र
कार॥ १८ ॥इतिश्रीमनमहाराजकुमा
रइंद्रजीतविरंचितायांरसकप्रिया
यांचतुर्विधिनाइकप्रछन्नप्रकासव
र्नेनंनामद्वितीयप्रभाव॥ २ ॥अथना
यकालछन॥दोहा॥तानायककीना
इकाग्रेयनतीनप्रमान॥स्वकियाप्रकि
याअवरसामानासबषान॥नाइका
जातिलछिन॥प्रथमपद्मिनीचत्रणी
जुवतीजातिप्रमान॥बहुरिसंषिनी
हस्तनीकेसवरायसुजान॥ २ ॥पद्मिनि
सहजसुरूपसुगंधसुभपुन्यप्रेमसुषव
दांन॥तनुतनुभोजनरोषिरतिनिद्रा
मानवषांन॥दोहा॥सलजसुवुद्धिउदार
म्रदुहासबासमुचिअंग॥अमलअलो
मअनगमरूपदमनिहारकरंग॥ ४ ॥सवै
या॥हसतकहततबातफूलसफरतजात
गूढमरिहावभावकोककीसीकारि
का॥पन्नगीनगीसुनारिआसुरीसुरी

...मारों किन्नरी नरी गंध्र्वा
रि नारि... ॥ तापै हूं कहा हूं जाउ बलि
जाउ के सोराय रची है बिरंचि त्रिजित्लो
चन की तारिका ॥ और सब भांत तैं अमित्रो
घ त्लाघ भांति न सो चंपे की सी कली व
घभानु की कुमारिका ॥ ५ ॥ अथ चत्र
नी ॥ दोहा ॥ नृत्य गीत कविता सु चै अच
ल चित्र चल दृष्टि ॥ बिहरति रति अति सु
रति जल मधु सुगंध की सृष्टि ॥ ६ ॥ बिरल
कोमल तनु मदन गृह भावत सकल सवास
मित्र चित्र पिय चत्रणी जानहु के सव दास
७ ॥ सवैया ॥ बोलि बो बोलनि कों सुनि
बो अवलोकनि कों अविलोकनैया ले
नाचि बो गाय बो बीन बजाय नो रीझि
रिझाय बो जानत तोलै ॥ राग बिराग न
के परस भण हास बिलासन के रस होते
तो मिलतो हरि मित्र ह कों सखि अस च
रित्र जो चित्त मे होतें ॥ ८ ॥ संषिनी ल
छिन ॥ दोहा ॥ कोप सील को बिद कपट
स जल स लोम सरीर ॥ अरुण बसन न
व दान रुचि निलज निसंक अधीर ॥ ९

रस०
६
12

छार गंध घृत मार जल तप...
३॥ सुरतारत अति संछिनी प...हु कबि
जन सो ३॥१९॥ सवैया॥ जातुन हीं कद
ली की गली नि भली विधि लै बदली मु
हला वै॥ चाहे न चंप कली की घली
नलिनी मलिनी की दिसा निसिधा वै॥
जो कोउ के सव नाग लवंग लता लव
ली अवली नि चरा वै॥ वारि कदाष च
राय मरे लउंउंट हिं उंट कटे रा ही भावै
२१॥ अथ हस्तिनी॥ दोहा॥ स्थूल अं
गली चरन मुख अधर भ्रकुट कटि गोप
मद न सद नीरिति कंदरा मंद चाल चित
लोल॥२२॥ स्वेद मदजल द्विरद मद गं
धित मरे केस॥ अति तीछन बहु रोम त
नु सभनि हस्तिन भेस॥२३॥ सवैया॥
सब देह भयी दुरगंध मयी मति औंधद
ई सुघ पावत के से॥ कछु साल तेरे नाम
विषा लहै श्रुति ताउ न के शव राय अ
ने से॥ अलि ज्यों मलनी बलिनी तजि
के किंसुणी के कपोल नि मंडित जैसे॥
छिति छाडि के राजसिरी बस आपनि
रे पद राजि बिराजित जैसे॥२४॥ छं

13

अथ ग्रंथ केयानाइकालछिन॥ दोहा॥
संपति विपति जु मरण दुसदा एक
अनुसार॥ ताहि सुकिया जानि यहु
मन क्रम बचन विचार॥२५॥ स्वकि
या भेद॥ लछिन॥ मुगधा मधा प्रोट
गति तिनके तीन बिचार॥ एक एक की
जानिय हु च्यारि च्यारि अनुहारि
२६॥ मुगधा भेद॥ नवल वधू नवयोन
नान वलअनंगा बाम॥ लज्या लियै
जु रति करै लज्याप्राय सबाम॥२७॥ न
वलवधु मुगधा॥ दोहा॥ तासौं मुगधा
नववधु कहत सथाने लोय॥ दिन दिन
दुनी धुनि वढै बरनि कहै कवि कोय
सवैया॥ मोहि वो मोहन की गति को ग
ति ही पटि वैन कहा धौ पटैगी॥ उपई
से जुन की उपजै दिन का है मटै अगि
यान मटैगी॥ नैनन की गति गूढ च
लाचल केसव दास अकास चढैगी
माय कहा कहा माय गी री पति जो हरि
नेह इह भांति तढैगी॥२८॥ अथ नव

२स.

१४ 14

व
जोवनथम्रूति ॥ दोहा ॥ सोनव [illegible] बनमं
चिता मुगधा को यह बेस ॥ तालि द सानि
कसे जहा या बन को परवेस ॥ ॥ सवैय
केस व फूलिन चीम कुटी कहि लूटि नि
तं बलु ई बहु काली ॥ नैननि सा चस के
चसों नैननि छूटि गई गति की चलि चा
ली ॥ धीस कु धीर धरो न धरो जा वले मिलि
कुतुम को बन माली ॥ या को न पाने न
का सन कौ उर आए है जो बन के आनि
ताली ॥ २० ॥ दोहा ॥ मुगधा न वल वधु नेव
ल जानेगा हाइ सो मुग्धा के स वदास ॥ रव
ले बोले बाल विधि है से असेस विलास ॥
२२ ॥ सवैया ॥ चंचल नहू जे ना ए अचल
न औचो हा एसा वै नेकु सारि काउ सुकतो
सु बाधो जू ॥ मंद के रादी प दुति चंद मुखदे
१५. बरात दोरि के दुराए आड दूर त्यों दिखा
योजू ॥ मग जग सपल बाल बाहिर न ड़ा
रे देवु भाया तुम के सव सु मो हू मन भा
यो जू ॥ छन के निवास जेसे बचन बि
लास सुनि सो गनौ सुरति हते स्याम सु
खपायो जू ॥ २३ ॥ मुगधा लज्जा प्राय सं
चो पी को लछन ॥ दोहा ॥ मुग्धा लज्जा

प्रायसूति बरनत कबि यह रीति ॥ करैं जु र 15
ति त्रति लाज सों पतिहि बढावै प्रीति ॥ २४
सवैया ॥ बोली न लाय रहे हरि पाय परे
और ओति यत्रोडी ॥ के सब भेटिवे कों भरि अं
क छुडाय रहे जु में पतिं छोडी ॥ सुधे चितै
वे को कितो कियो सिर चापि उठाय न भूठ न
ठोडी ॥ मैं भरि छिन लैं छिनत्यो नरही गहे नै
न लिलाज निगोडी ॥ २५ ॥ मुगधा को सप
नु ॥ दोहा ॥ मुगधा सो पर हे नहीं पिय संगि सु
नह सुजान ॥ ज्यों केहू सो वें सखी सुखन हि
ताहि समान ॥ २६ ॥ सवैया ॥ पायपरे मनु हा
रि करे पलि का पर पाय धरे भय भीनें ॥ सो
इ गई कह के सब के सहुं को रि ही कोटि क
सों हन कीनें ॥ साहस के मुख छोडि नमे ह
रि मानि सबै सुख लीनें ॥ एक उसासहि
के उससे सजे रयसु गो घबि दाकरि दी
नें २७ ॥ मुगधा को सुरतांत ॥ दोहा ॥ मु
गधा सुरति करे नहीं सुपने हु सुषमा
नि ॥ छलन तन कीन्हें होत है सुख सोभा
की हानि ॥ २८ ॥ सवैया ॥ सुख देस सखी

16 निवीचिदैकैसौंहद्यायकैबबहकछु
स्वायबसकीनीबरबसुहै॥ कोमल
मृणालकाकीमल्लिकोकीमालिका।
कीसीबालिकासीआरीमीढ़िमानुसु
कीपसुहै॥ जानैनबिभालभयोकेसव
सुनेकोबातेदेखोमाजिगाजातुभयो
किधोंअसुहै॥ चित्रणीयुराबीयहचि
त्रणीविचित्रगतिकहैधोनपरसीक
यामेकोनरनुहै॥२९॥ मुग्धाकोमान
दोहा॥ मुग्धामानकैरैनहीकरैतोसु
नोनिदान॥ ज्योंउरपायछिरायये ज्यों
उरपैअग्यान॥३०॥ सवैया॥ बोलैनबो
लबुलावतहेंनबैरबलिबेभुवप्रे
मपरेखो॥ आपनेहाथविलोकवि
लोकचाहोतबकेशवबुद्धिविसेखो
छोटीबडीविधिदेबलिखीयुगआ
युकीरेखसुकोनजुलेखो॥ प्रेमलेबा
लसह्योनपस्योआकुलायकह्योपि
यकैसेहूदेखो॥३१॥ अथमध्याल
छनं॥ दोहा॥ मध्याआरूढयोबनाप्र
गलभबचनाजानि॥ प्रादुर्भूतमन

सवैया ...युत लावचित्राग्यानि ॥३१॥ मध्या
ग्यरूढजोबनापरबजोबनवंत ॥ भाग सु
हाग भरीसदा भावत है मनकंत ॥ ३२ ॥
सवैया ॥ चंदकोसो भागुभाल भ्रकुटी क
मानग्यसो मैनके से पैनैसनैननिविला
सुहै ॥ नाम कासरोज गंधबाहु से सुगं
धबाहदाख्यौसेदसनके सोवी जरी सोहा
सुहै ॥ भोयश्रैसी ग्रीवभुजपानसोउदर
वरपंकजसे पाय गति हंसकीसी जासुहै
देषीहै गुपालयेक गोपिकामैदेवतासी
सोनोसो सरीर सबसौंधेकीसीबास है
३४ ॥ अथप्रगल्भवचनामध्या ॥ दोहा ॥ प्र
गल्भवचनाजानिसोनरलेकेसादास
बचननिमोहि वराहनै ो देइषिषावै त्रास
३५ ॥ सवैया ॥ कान्हभले जुभलेहं गिला
गेभलेहु हो नैननिकेरंगरागे ॥ जानतहौ स
वही तुम सौं जानतआपसोंकेसवलालच
लागे ॥ जाहुनहीं अबचलेहरिजातजिते
बनहीबनिबागे ॥ देषिकहारहे धोषे
परे उघदेअबदेषियेदेषहुआगे ॥ ३६ ॥
दोहा ॥ प्रादुर्भूत मनोभवा मध्या ॥ दोहा

प्रादुर्भूत्तमनोभवामध्याकहीवेषा॥ न
तनत्तनमूषित्तसोहियेकेसवकामक
ल्यान॥७७॥ सवैया॥ आजमैदेषीहैगोप
सुताइकहोइनऐसीअहीरकीजाइ॥ दे
षतिहीरहियेइतिदेहकीदेषैतेआनंद
कीसुहाइ॥ एकहीवेगिविलोचनकैपरि
वारोविलोकनिलोकनिकाइ॥ केसव
दासकल्यानिधिसावरवूझिएकोमूक
मेरोकन्हाइ॥७८॥ अथविचित्रसुरतामध्या॥
दोहा॥ अतिविचित्रसुरतासुतोजाकोसुर
तविचित्रवरनतिकविकुलकोकटिवसु
नतसुहायोमित्र॥७९॥ सवैया॥ केसवदा
ससविलासमंदहासयुत्तअवलोकन
आलापनकोआनंदअपारहै॥ वहिरत्त
सातभातिअंतरितसातपुनिरतिवि
परीतिनकोविवधिविचारोहै॥ छुटि
जातलाजतहाभूषनसुदेसकेसटूटि
जातहारसवमिटतसिंगारहै॥ कूजि
कूलिउठैरतिकूजततनघनमुनिसोइ
तोसुरतसषिओरमवहारहै॥८०॥
मध्यसुरतात॥ ऐसेरतापयपावकजा

वकपीकहीयेनषचंदनाएहै ॥ चंदनचत्रसुधा 19
विषअंजनदूठिसवैमणिहारगएहैं ॥ केसव
नैननिनीदमयीमदिरामदध्रमतमोहमयै
है ॥ केलिकैनागरिनागरआजुउजागरसा
गरसेसमयेहै ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ सिगरीमध्यानी
नविधिधीराऔरअधीर ॥ धीराधीरातीसरी
बरनतहैकविधीर ॥ ४२ ॥ अथधीरालछनं
धीराबोलैवक्रविधिबानीविक्रमअधीर ॥
पीयसौंदेयउराहनोयोधीराअधीर ॥
४३ ॥ मध्याअधीरालछन ॥ सवैया ॥ तात
कोसोगातसबवलबीरकोसोमुषदेषो
मोहमहामोहूमनभायोहै ॥ षलसोअ
वलसीलअनलसेचलचितजलसेअम
ललेजुलेजकोसोगायोहै ॥ केसोदासब
सतआकासकेप्रकासभावघटघटघोरघे
हघोरमनुछायोहै ॥ रतिकीसीरतिनाथ
रूपरतिनाथकोसोकहोकेसोदासऊठको
नमहिपायोहै ॥ ४४ ॥ मध्याधीराधीरा ॥
कान्हभलेजुभलीसमझाईहोमोहसमु

२० 20 द्रके उमह्यो है ॥ केसव आपनो मानु
कसो मनु हाथ पराये दै कोन लह्यो है
मैननि ही मिलिबो करियै अब बैननि को
मिलि बोलो रह्यो है ॥ आथक ह्यो तुम जैसो
सखीस हु ए हो गुपाल मैं ऐसो कह्यो है
४५ ॥ इति मध्या ॥ अथ प्रौढा ॥ दोहा ॥ सुनिस
मस्तरस कोविदा विचित्र विभ्रमा आति
आतिप्राक्रमिति नाइका लच्छायति सुभ
भांति ॥ ४६ ॥ प्रौढा ॥ समस्तरस कोविदा ॥ स
वैया ॥ देखी है गुपाल एक गोप कांमनरूप
पलोनै लै सलोनी बास सौंधे लै सुहाई है
सोभा है सुभाय अवतार लियो घनस्याम
कि धौं यह दामिनी यै कामि हू आई है ॥ दे
वी कोइ दानवीन होइ कैसी मानवीन भा
नवीन हाव भाव भारती पढाई है ॥ केसो दा
स सब सुख साधन की सोधिये है मेरजाने
मैनही सो मैन काकी जाई है ॥ ४७ ॥ विचि
त्र विभ्रमा प्रौढा लछन ॥ दोहा ॥ आनि विचि
त्र विभ्रम सदा प्रौढा प्रगट बखानि ॥ जाकी दी
पग इतिका पिय हि मिलवा वै आनि ४८ ॥ स

सवैया॥ हे गात मंद मनोहर केशव आनंद कंद हिये उलहे है॥ भौंह विशालनि कोमल हासन अंग सुबासन गाढे गहे है॥ बंक बिलोकनि को अविलोक सुमार है नंद कुमार रहे है॥ एयलो काम के बाव कहा बतफूलिनि मे बिधि भलि कहे है॥ ५०॥ अथ आक्रमतिनायका लछिन॥ दोहा॥ सो आक्रमतिनाइका प्रोढा कहि दो चित॥ मनसा बाचा कर्मना जिहि वसि कीन्हे मित॥ ५१॥ सवैया॥ लोहित गावत बजावत नाचत बारक अनेक सिंगार बनायो॥ जीउ में आनि के आनि बोछा डोरी लरे त उनमयो मन भायो॥ भावे सत्तु करि बोकरी भामिनि भाग बडे बस है करियो॥ कान्ह सोंम्रुधे ज चाहित नोहि सु चाहत नांहि सु चाहित है अब पायु लगायो॥ ५२॥ दोहा॥ सोलधाय त जानिए प्रोढा प्रगट प्रमान॥ नाइक के संगि सुंदरी विहरत कहत सुजान॥ ५३॥ सवैया॥ आज बिराजत है कहि केशव श्री व्रषभानु कुन्हाइ॥ बीनी बिरंचि विवहि हं म काम रची ज बची सब धुनि बनाई॥

कुमारि

रसक॰
११
22

अंगविलोकि त्रिलोकमें ऐसी को नारि निहारि न नारि बनाई ॥ मूरति वंत सिंगार समीप सिंगार किये जनो सुंदर नाई ५४ ॥ अथ प्रौढाधीरा ॥ दोहा ॥ आदर मांहि अनादर हि प्रगट करै हित होइ ॥ आक्रति आप दुरावई प्रौढाधीरा सोइ ॥ ५५ ॥ सवैया ॥ आवत देखि लिए उठि आगे व्है केशव आपही आसन दीनो ॥ आपही पाव पखार भले जल पान को भाजन ल्यायन वीनो ॥ वीरी बनाय के आगे धरी जब देह हरि को कर वीजना लीनो ॥ बाह गही हरि ऐसे कह्यो हसि मे तो इतो अपराधन कीनो ॥ ५६ ॥ प्रौढा आक्रति गुप्त धीरा लछन ॥ सवैया ॥ चित्त को चित्त वाये हसाए हसो हो बुलाए तो वालो रहो निति मोने ॥ सो हम ने कनि आव हू ऐसे करो रति को प्रति रति करो नै ॥ वाय ते साहू बनाइ वीरी जनु आए हे केशव आजही गोने ॥ मोहन के मन को मोहनी सु कहा यख धो सिखई सिख कोने ॥ ५७ ॥ सवैया ॥ हित के इतनेहू ह्व है वो सब हि वातमनो जमुनी सव ही है ॥ यह लोक छु

सवै
ओर वहै सब ही म्रु सों हकरो जु करीत 23
वही है॥ समझायक हो समझी हमकर
बकूठी सबै हमस्यों जकही है॥ मानिवि
या अपमान करै तो हसो अब कै हसिबे
कोर ही है॥ ५८॥ धीरा लछन॥ दोहा॥ मु
हुरु बीनाता कहै जो पमे पिय की भुष
धीरा जानिए जैसी मीठी उष॥ ५९॥ सवै
हो मन मे लैन बोलो कछु अब छाहु बो
लिबो नो तहु सो है॥ के सब ओर नै सोर
मरा सिर स्यों रस बादु सबै हम सो है॥ देष
हु धो इक बार सको चनि आरस लो चन आ
रसी है॥ आये जु खेसे ही सा ज सो आ
जु मु भूलि गए पिय कालि ही की सो है॥ ६०
इति स्वकिया॥ अथ परकीया॥ दोहा॥ सब
ते पर पर सिद्ध जगत की त्रिया जु होय॥ प
रकीया तासों कहे परम पुराणो लोय॥ ६१
अथ परकीया भेद॥ परकीया है भांति
पुनि उढा एक अनूढ॥ जिन्है देषि मुनि
होत सब संतत मूढ अमूढ॥ ६२॥ अथ
उढा अनूढा लछण॥ ऊढा होत विवाहिता

अणवि वाहितामग मूढ॥ तेसमझै केशव
२२ कहै नाहिनै जानै मूढ॥९३॥ सवैया॥ बैठी
24 सषीन की सोभै सभा सब ही के सुनैन
निमौऊ बसै॥ कैसेहो बाल वस्यौ करै
मन ही मन केशवदास हसै॥ खेलत है
इत खेलव ते पिय खिल खिलावत यौ बि
लसै॥ कोउ न जानै न ही दृग दोरि कबैकि
त हे हरि आनन छूनि कोसै॥९४॥ अथ
अवेदा॥ बैठी हुती ब्रजनारिनमै ब
निसौव ष भानु कुमारि सभागी॥ खेल
त ही सषि चोपरि चारु भई तहां खेल ष
री अनुरागी॥ पीछे ते केशव बोलि उठे
सुनि के चित चातुरी आतुर जागी॥ जा
नी न काहु कै कै हरि के स्वर मार म ही स
बसी दृग लागी॥९५॥ इति श्री मन्महा
राजकुमार इंद्रजीत विरचितायां र
सकप्रियायां भाव बोध त्तीय प्रभाव
३॥ अथ दरसन निरूपण॥ दोहा॥ ए दो
ते दरसे दरस सरस होय सु काम सरीर॥
दरसन चार प्रकार को बरनत है कबि
धीर॥१॥ एक जु नीके देखिए दूजो दरस

नीच त्र॥ देषिसुपनौ तीसरो चौथो श्रव
न निमित्र॥२॥ साछात प्रछन्न दरसन
प्यारी जू को॥ दोहा॥ नींद भूष दुति देह
की गयी सुन नहीं जाहि॥ को जानै हू है क
हा केशव देषत लाहि॥३॥ सवैया॥ केशव
श्री वृषभानुकुमारि सिंगारि कै सब बेसर सै
स विल्लास चित्तै हरि नाइक त्यों रति नाइ
क साय क से बरसै॥ कब हू मुष देषत द
र्पन मे उपमा मुष की सुषमा परसै॥ जनु आ
नंद कंद स पूरण चंद हू त्यो रवि मंडल मे द
रसै॥४॥ प्यारी जू को साछात दरसन सवै
या॥ पहले न जिन्नार सन्नार सी देषि कछु
कधो बेधन सार हि लै॥ पुनि पुछि गुलाब
न गुच्छ फुले न्नस गोछ मे न्नाछ न्नस गोछनि
कै॥ पुनि केसव मेद जवाद सो माजि इतेप
र न्नाज मे अंजन दे॥ बहु त्यो फिरि देषि जो
देषै तो देषरी लाज तो लोचन लागी रहे
५॥ श्रीकृस्न को साछात प्रछंन दरसन स
वैया॥ भाल गुही गुन लाल लटै लपटै ल
र मोतिन की सुष दैनी॥ ताहि बिलोकत न्ना

रसी लै करि प्यार सरसै इन सारस नैनी॥
केसव स्याम दुरै दरसी परसी उपमा म
ति तै अति पैनी॥ सूरज मंडल मैं ससि
मंडल मध्य धसी मानो बाहु त्रिबेनी॥५
श्री कृष्ण को साक्षात प्रकास दर्शनम॥ सवै
या॥ इकु तो वर गोर व रो उत्तम नूपम ते
सो मनो हर हार महारी॥ चित्त चलै त
रुनी निहु के तहू नैनन की के प्रव बात क
हारी॥ हित सो हित की कहि हीं परि आ
वत को लग है जेरि कौतिग हारी॥ अब
रलै नंदलाल नविलोकत री दधि नो षी
वि लोचन हारी॥७॥ प्यारी जू को प्रछन
चित्र दरसन॥ दोहा॥ चित्रहू मै हरि मि
त्र की आति विचित्र गति गूढ॥ प्रगट काम
को कलप तरु कहि न जाय मति गूढ॥८
सवैया॥ लोचन नंदि चलियां इत को मन
कीति यद्यपि नेह न ईहै॥ आनन आयग
ए समि सी करि रोम उठे कर कंप भई है॥ ना
सो कहा कहिये कहि केसव लाज समुद्र
मै बूडि रही है॥ चित्र हू मै हरि मित्र को दे
षत यो सकुची मानो बांह गही है॥९॥
प्यारी जू को प्रकास चित्र दर्शनम॥

सवैया ॥ केसोदासनि हद सादी पगु सं योदू
के से ज्योति ही कि ध्यान तुमले जाहिन साई
है ॥ ज्यो बिन सौनां देख्यन काहू कीन भाजी
म थपानी की कहानी रानी प्यास वयो बुझा
ई है ॥ एरी मेरी ईंदु मुखी ईदी बर नैन लै बै
ईदिरा को मंदिर मे संपति सहाई है ॥ जैसे
दिन जैसे ही गैवावत गवारी कहा चित्र दैषे
मित्र को मिलि को सुख पाई है ॥ ९० ॥ श्रीकृस्न जू
को प्रछन चित्र दर्शन ॥ सवैया ॥ रूठिबे को
लूठिबे को मंद मुसकानि कै विलोकिबे को मं
द कछु कह्यो न परतु है ॥ केसोदास बोलै बि
ना बोलन के सुनै बिना हि लिषि लिषि लषि वि
न मोहि क्यो सरतु है ॥ कौन गम लूनो रूप
प्याइ प्याय राषे नैन नीर दै षै मीन कै से धीर
जु धरत है ॥ चित्रणी विचित्रणी कि ननी के इ
चित याम नु चित्र मे चितये चित चोगनु जरु
तहै ॥ ९१ ॥ श्रीकृस्न को प्रकास चित्र दरसन स
वैया ॥ जंतरिछ गछिनी नियछनी सुलछ
नी निसां चिरनाछी आछिनी निछि विछि मनी
य है ॥ किन्नरी नरी सु नारि पन्नगी नगी कु
मारि आसुरी सुरीन हू निहारि नमनीय है ॥

रस
१४
28
भोगन की भामिनी यौ देह धरे दामिनी यौ
काम कामिनी यौ कहा ऐसी कमनीय
है॥ चित्रहू मे चित्त हि चुराय लेत कोई द्रुह
राम की सौं रमणी रमा सौं रमणीय है॥
१२॥ प्रच्छन्न कौ स्वप्न दर्शन॥ सवैया॥ ६
आतुर है उठि दौरि अली जन आतुर ज्यों
गहि जो संग ही त्यों॥ कहो मेरी रानी कहो म
यो तो हि हूं बूझत केसव बूझि रही त्यों दी
ठी लगी कि धौं प्रेत लग्यो कि लग्यो उर प्री
तिम जाहि डरी यो॥ आनन सौं कर सौं कहि
ये धक सौं वृत ते अकुलाय उठी कियो॥ १३
सवैया॥ नख पद पद वी को पावे पार द्रौ
पती नि राके विस्वा कर बसी उर मे न आव
नी यी॥ चोमसी पुलोम जातति लसी
तिलोत मान मे लहू समान मन मेनकी
न मानवी॥ जानि ए ने कौन जाति अब
ही जगाय जात जाना जानि हौं जो वह
यो ही पहचानवी॥ जानकसौ बानी महि
मा व सो भवानी महि के सो रायरति मे रती
कज्योति जानवी॥ १४ ॥ दोहा॥ केसव
दरसन सुपन को सदा दुख्यो ही होय॥ कं
बहु प्रगटन जानिए यह जानत सब लोय॥

छेदमसु
पनद

१५॥ प्यारी जू को प्रश्न चित्र दरसन। सवै
या॥ सोहै दिवाय दिवाय सखी यक बार
कै कानन आन बसायो॥ जानै को केसव
कानन ते कि हे कब नैन निमाऊ सिधायो।
लाज के साज धरे हर है सब नैन न लै मन ही
सो मिलायो॥ कैसी करो अब क्यो निकसै
री हरे इहर हैय मै हरि आयो॥१६॥ प्यारी कौ
प्रकास स्रवन दरसन॥ को लोपी है कन रह स
पकी बूझै है प्यास के सो दास कै से इन नयनै
सो भरि पीजिए। बीर की मेरी बीर हे तू वारो ऽ
आनि नैक हरि हसि है त सो च लाय लेरी ली
जिये बरस क माऊ पहे वै सम लव लीनी तै
दै है सुख सखीन को अब ही न दीजिये। एरी
लेउ बावरी अरि गैस कूठ तहो मा ह सो सने
ह कीजे ना ह सोन कीजिये॥१७॥ श्री कृस्न जू
को प्रश्न स्रवन दर्शन॥ सवैया॥ लेखित है लो
का लोक लीक न उलंघी जात सव कै तू सम
झावै तो हि समझावे को॥ काउन कहत नत न
कन छूटे लाज धन मीत रा ब्रिदो उकोविद
कहावै को॥ सोच कोस को चहै कौ १९ बप ऽ
छिन पंथ के सो दास ये के का लय के जन धा
वै को॥ दुख बु छहू या दूरी दूरि हूते मेरे जैसी
बु

१५ सुनि ते सि हि आंखिन दि षावै को ॥ २८
30 श्रीक्रस्न को प्रकास अ्रवन दर्शन ॥ स
वैया ॥ निपट कपट हरि प्रेम को प्रगट
करि बीस बिसे बसी करके सेव र आनि
ये ॥ काम को प्रहर बन का मंना को बर
षन कान्ह को सेक षेन सब जग जा
निये ॥ कि धौ केसोदास महि मोहनी
को भूषन है किधौ व्रजिवालान को
भूषन बषानिये ॥ सुनत ही छुटै धाम
बन बन डौल्यो स्याम राधे तेरो नाम कि
उच्चाट मंत्र जानिये ॥ २९ ॥ दोहा ॥ द
रसन रस मनीय के कहे परम रमनीय
प्रगट न प्रेम प्रभाव कहि कहो कछु क
मनीय ॥ ३० ॥ इतिश्री मनमहाराज कु
मार इंद्रजीत विरंचितायां रसक प्रिया
यां सारदीपका यां चतुर्थ प्रभावः ॥ ४
अथ चेष्टा वर्णनं ॥ दोहा ॥ तिन के
चित्त की जानि सषि प्रिय स्यों कहे सुनाय
कहे सषी सो प्रीत मों आपुने ते अकुला
य ॥ १ ॥ सवैया ॥ कालि ही की ग्वालि सुषी
आजे हूं लोन संभारत केसव केसहु
देहे ॥ सीरी हे जाउठे कब हूं जरजी व

रह्यो किरहीरू चिरे हे ॥ कोरिबिचारि वि
चारि लहे उपचारन के बरसे सखि मे हे ॥
कान्ह बुरो जिनमाने तिहारो विलोकन मे
विसबीस विसे हे ॥ २ ॥ सवैया ॥ प्यास टू
रहीउदास भाजी भखगई ॥ त्रास के सोदास
निद्रा हू कीनि दादी निठाने हे ॥ मतिको म
तो न लेय बिद्या की न दाहि देय सो भाख की
सपसेय सब सुख सानी हे ॥ विसु से लगात
गीत के लिकीन परतीति प्रीति उरपाहु नी
सी पचिपचि हिचानी हे ॥ तोबिन कहे को
गाय धतान ताके साछि मोहि को मिलावे
हाय लाजके बिकानी हे ॥ ३ ॥ दोहा ॥ प्रिय
सो प्रगटन प्रीति कहि जितने करे उपाय ॥
ते सबके सब दास के बिनर नेसब निसुना
य ॥ ४ ॥ जब चित दे प्यो जान तहीं तव चित बे
निरसंक ॥ जानि विलोकत आपत्यो आलि
ही गावे अंक ॥ ५ ॥ कबहू कति के दूकरे आ
रससों सेजाय ॥ के सब दास बिलास सों
बार बार जमजाय ॥ ६ ॥ जूठे ही हसि हसि
उठे कहे सखी सो बात ॥ ऐसे सो मिसही मिस
प्रिया प्राप्त हिदि खावेगात ॥ ७ ॥ सोप्रथ

१६
32

प्रकासकै़रि बुधिबल करत समीत
प्यारीजूकी प्रछन्न चेष्टा ॥ सवैया ॥
चोरि चोरि चितु चितवत मुष मोरि मो
रि कैहहै हसत हिये हरि षवढायो
है ॥ केसोराय की सों प्यारी तू ज्यों भांति
बार बार बीरा बांहि मेरी बीर आर
सु जो आयो है ॥ ऐसे मै ऐ जात अति
अवलाउत उरधरि कै घरि जातु गात
छबि छायो है ॥ फूलि फूलि लेटत रह
ति उरफूलि फूली भूलि भूलि कहत क
छु ते कआज पायो है ॥ ९ ॥ प्यारी
जूकी प्रकास चेष्टा ॥ सवैया ॥ मेरे मुह
चूवे तेरी पुतरी सौ षचुमि बकी चाटउ
रआस कैयो सरात प्यासा झोटै है ॥ छोटे
छोटे मेरे कर छावत छवी लो छाती
छबीजा के आप छाषबे को अभि
लाष बाढै है बेलन जो आये होतौ
बेलो जैसे बेलतके सोराय की सौं
एतेबल कहा काढै है ॥ बार बार मे

टती सुमोहि कहा मेरी भटू भेद तिन जा 33
हि जु वे भेरि वे को ठाडे है ॥११॥ कृष्ण की
प्रछन चेष्टा ॥ सवैया ॥ छोरि छोरि बाधे
पाघ आरस सो आर सी लै आन त ही आ
न भांति देषत अनैसे हो ॥ कबहू चुटकी
देत चटकि पुजावे कान मटकि मैं डात
जुरी ज्यों जभात जै से हो ॥ बारबार देत म
ए मा लग ए जा हि ताहि गावत कछू
को कछु आ जका न्ह के से हो ॥१२॥ श्री
कृष्ण जी प्रकास चेष्टा ॥ जाल गिलो चु
नुगा इन दे दिना नाचन चावत सो क
प हाउ ॥ के सब मित्र करो बसकार के हा
र कयत्र कहा लोग नाउ ॥ हेरि रहे हरि ऽ
क्यो हू मिली न मिलाउ जो जाहि तो मागे
सु पाउ ॥ ठाटी बे जाय मिलौ मिलिवे कहु
आर कहा कनियां करि ल्याउ ॥१२ आप
स्वयं दूतत्व ॥ दोहा ॥ ज्यों क्यो हू न मिले
कहु के सब दो ई दूठ ॥ तो तब अपने आप
ही बुधिबल होइ नसीठ ॥१३ ॥ सवैया ॥

१७ 34

स्वयंदूतत्वप्यारीको॥ दूरिते देषिवे
कोहेहै दीनमना ह्व हूती लिषिहीलि
षिचीठी॥ देषि मिल्योमन हूमेंनै हू मि
लामिलिषिलिवेकोमिल्योमतिमी
ठी॥ ओरजोओर चलाय हो केसव
के सेहूकान्ह कुमार नदीठी॥ तो हेहेत
बार मुरारके लारज्यों दूहैगी लालसवे
तुमईठी॥१४॥ छुवेजिन हाथ सोहा
थहियेपलहीपल बाढत प्रेमकला
नजानिये जी मेकहा वसिजाय चले
पुनि केसव कौन चला॥ भलेही भले
निवहोजुभलीयह देषतही कीभला
ईहला॥ मिल्यैमन तो मिलिवोईकहा
मिलिवो नक्स ...लोकहि नेद लला
१५॥ स्वयंदूतत्वप्रकास॥ सवैया॥ धा
ईनहीधर दाईपरीजु रुसायषिलाय
कीआषिवहोउ॥ पैरियेआवैररतो
धोरलेपरउ चोसुनै सुमही दुपपाउ॥
कान्हनिवार हुन्यावनवोईनआल
निकौलगिहोबहराउ॥ मासगियेस

बसो वनआवे कि हूं इनके संगिसो वनआ
उ ॥२८॥ सवैये ॥ दूतत्व क्रमकी ॥ आपने ही भा
एकरो सो हत सरीरू के सेवे के सव दास दास
जौं चलत चित्त लीन है ॥ आपए आठाउ के
तल ललना व मेरो वे लो वा पुरे मिलाप के
सलाप कारि ही ने है ॥ राधिका सुनायके क
हत ऐसे घनस्याम सुव लै कौ लै लै नाम
काम भय भीने है ॥ साषिले स आन अवछ
ओबन जे बाहम षेलिवे कौ संगी सषा सा षा
मग कीने है ॥३०॥ प्रकास प्रत्युत्तर ॥ सवैया
वन जै जे चलो कोउ ठाली हू के सव हो तुम
है तो अरी अरि हो ॥ कछु षेलिए पेषि न आ
वत आज हू भलपे न भल्यो गैर पर हो ॥ हि
तू है हिय है कि धो नाहि तउ हि तुना ही हिये
तो लललाल रि हो ॥ हम सों यह पूछिए ऐसी
कहो जु कही हो कही वक हा करि हो ॥ ३१ ॥
दोहा ॥ उठा पुनि यह भांति की बहु विधि हि
तन जनाय ॥ आपन हू ते नाजत जिपति हि
मिलै अकुलाय ॥ ३२ ॥ सवै ॥ पंथन थकित
पन मनोरथ रथन के केसो दास जगमग जे

१८
36

सगायेगीतमे॥पावनविचारिवक्रचक्र
मनचितुचढिमललम्रकासममेंघाम
जलसीलमे॥कालोराछोछि रवपुना
पीकूपसरसमहिरिबनकीनेचहुबा
सरवितीतमे॥ज्ञानगिरिफारितोरिला
जतरुआईमिलोआपुहीतेआपुआ
योआपुनिधिप्रीतिमे॥२०॥सवैया॥
जातभईसबजातलेकीरतिकेशवहे
कुलमोहितुफूटो॥गवैयागुनजोतन
रूपकोपुन्यसुतोपलहीपलकूटोका
न्हतिहारीहोंआनिकियेकहालाजसो
नाकेहेनातोइछूटो॥छाउनालबेहरि
हेरुतिमेतुमपैलनुकेकपटोनहीछू
टो॥२१॥दोहा॥अधिकप्रमोढालाज
तेपियपैजायनआपु॥वेषाहीकरस
खियेकहेताकेलनकोतापु॥२२॥सवै
आसेनकोकेशवकौनकहोकबका
न्हहमरहियेइोरिनघूले॥पानवघा
यनपान्मोपीवेतबतेभरिमांखिये
लेतसमले॥जाहुनहीचलिवेजिवला
यलोलोहोसकेति कहाभयमले

जानतहोयहकामकली कुमिलायग
येवहुस्योफिरिफूले ॥२२॥ इति श्रीमन्
महाराजकुमारइंद्रजीतिविरचिताय
रसकप्रियायां भोगश्रृंगारपरकीयाचे
ष्टावरननं नामपंचमप्रभावः ॥५॥ अ
थ मिलनस्थानवर्णनं ॥ दोहा ॥
जनीसहेलीधायघरि सूनेघरनिसिचा
र ॥ अतिभयउत्सवव्याधिमिस न्यूंतासु
वनविहार ॥१॥ इलनीठौरनहोतहैप्रथ
ममिलनसंसार ॥ केसवराजारंककोरचि
राख्योकरतार ॥२॥ जनीकेघरमिलन
बोलिकैमुरारिकाकोवेजकीकुमारका
निमांझसांझकेसोत्रासत्रासपगपेलि
कै ॥ कामकीकलतासीचलप्रेमपासमी
अमलराधिकाकेवृधिबलकंठभुज
मेलिकै ॥ दौरिदौरिदूरिदूरिएरिएरिअ
भिलाखलाखभांतिकीअनूपरूपपेग
ऊलिकै ॥ जनीकेअजरआजिरजनी
मेसजनीरीसांचीकीनीस्यामचोरमि
हचनीखेलिकै ॥२६॥ सहेलीकेघरि

रस- 38 २९

मिलनैं॥ नैननि कतारे नमे राख्यौ प्यारो पूतरी कि मूरती ज्यौं लाय राखौ दसन बसनमे॥ राखो भुज बीचि बनमाली बनमाल करि चंदन ज्यौं चतु चढाय राखे तनमे केसौदास कलकंठ राखौ करि कंठला ज्यौं कमेकमे कैयौं आनि येम वनमे॥ चंपे की कली ज्यो कान्ह सघे दे हदे वता सी ल्हेहु मेरे लाल रहे मे लिराखौ मनमे॥२७॥ धायघरि मिलन सवैया॥ हसत षेलत षेल मंद मंद चंद दुति कहत कहानी जोर बूझत पहेली लाल॥ केसौदास नींद वसि क्रौ पने आपने घर हेरे हेरे उठि गई बालिका सकल बाल॥ घेरि के ठगगन सघन सेच हृदिसि उठि चले कान्ह धायउठि बोली तिह काल॥ आधी राति आधिक अधेरा मांहि कैसे जैहो राधिका की आधी सेज सोयर होप्यारे लाल॥२८॥ सनै घरको मिलन॥ देष तही बिचित्र सनी चित्रसाला वाला आजु रूप की सी माला राधारूप कसु हाथै री॥ रूपर के सुरन मे अरूपता नैले तआति पग तल ताल दे तिआति स

नभायेरी॥ताकेपगलललतालमानों 39
देतहैतेबहोतमेरेमनकोभायेरी
केसवदासकहेपरेप्रलजसलजैसेन
जेलसेनेनलसेलेवचनजलहेथहोआएरी
अथमिश्वरकोमिलन॥सवैया॥ए
कसमेसबगोकुलदेषतगोपीगोपा
लसमहसिधाए॥रातिहुआईचले
घरकोंदसहोंदिसमेघमहामडिआ
ई॥दूसरोजानिएबोलतहीकलोहि
केसवरायूछितमेतमुछाये॥असे
मेस्यामसुजानवियोगविदाकेदि
येरूकियोमनुभाए॥३०॥अथभय
कोमिलन॥सवैया॥जागीआगिला
गीवृषभानजूकेभवननमेदोरिव्रजि
बासीचढेचहुदिसिआयके॥जहोतहा
सोरभारीभीरिनरनारिनकीसवहीकी
छुटिगईलाजहायबायके॥केसवकुव
रकान्हसारोसुबांहरकेराधिकाजगाय
औरजुवतीजगायकै॥लोचनविशाल
चारुचिवुककपोलचूमिचंपेकीसी
मालत्रालत्रीनीउरलायकै॥३१॥
उत्सवकोमिलन॥सं॰॥बालककी

१४० बरसगांठिताकीरातिजागिबेकोग्रा
२० यव्रजिसुंदरीसबारि तनसोनूसो॥के
40 सोदासभरिभईनंदजूकेमंदिरमध्य
मधऊरधबच्योनकहूकोनोसो ग्रा
वतबजावतनचतनानारूपकिये
जहांतहांउमगातग्रानंदकोग्रोनो
सो॥सांवरेकीसूनीसेजसोदूरहीरा
धिकाजीनहोरिजायसांवरेउमानि
मनगोनोसो॥उ॥ग्राघव्याधिमिसि
कोमिलनु॥सवैया॥सोधिनिदाननि
दानदियोउपचारबिचारकियेसुधि
रानी॥बेदकीसासनव्याधिबिनासन
होमहूतासनहोनहीरानी॥केशवकेयों
हूचलोबलिनोलतदीनभईव्रषभान
कीरानी॥ग्रायेहेमेटमहूकरिकेबहू
स्योबनकेवहपीरपुरानी॥उ॥ग्रुते
कोमिलन॥न्यूतकेवुलायहूतीबेटी
वषभानजूकीजेवेकोदसोधारानी
ग्रानीहेस्यंगारिके॥भोजनकेउपर
भवनगईपानषानदेषिबेकोकेसो
दीसग्रानंदबिचारिके॥देषतदेषत
हरिग्रावतेकोग्रागेदेषिदोरिगहीव्या

लक्ष्मै सीबेनी डरडारिकै। भेट भरी अंक
मनभायो करि छाडि दीनी मुहकेसर
लोमां डि लई बेसरि वर ता कै ॥ ३४ ॥
अथ वन विहार कै मिलन सवैया ॥ हरिरा
धिका मानसरोवर कै तट ठाडे री हाथ
सो हाथ छिये ॥ पियके सिर पाग बिराज
रही छवि छाजत माल दुहू न हिये ॥ क
टि केसव काछिनि सेत कसेस बही तन
चंदन चित्र किये ॥ निकसे छति छीरसमु
द्र हते संगि श्री पति मानहु श्री हि लिये ॥ ३५
दे ही री कालि है गई कहि दे न पसार हु भ्रो ल
भरोपुनि फेटी ॥ छाडो न ही मग छाडो जो
जो पिछु जो वो नो लकनि ला जलपेटी
बात सम्हारि कहो सुनि है कोउ जानत हो
यह कोन की बेटी ॥ जानत हे वृषभान की
है पर ताहिन जानत कोन की बेटी ॥ ३६
दोहा ॥ इह विधि राधा रमण के बरन हु
मिलन विसेष ॥ केसव दास निवास ब
हु बुधि बल जिन्ह कुलेषि ॥ ३७ ॥ इति प्रक्रि
या ॥ दोहा ॥ और अत रुनी तीसरी को
बरने दुहि ठार ॥ रस में बिरस न बरणिये

रस० २१

42

कहे रसिक सिरमोर ॥७८॥ दोहा ॥ येस ब
जित नीनायका बरणी मति अनुसार
के सो दास बषानियहु बुधिबल आठ
प्रकार ॥७९॥ इति श्रीमन महाराजि
कुमार ईंद्रजीत विरंचिता यो रसक प्रि
याया पंचम प्रभाव ॥५॥
अथ भाव बने ने ॥ दोहा ॥ आनन लोच
न बचन मग प्रगटित मन की बात ॥ ता
ही सों सब कहत है भाव कबिन के तात
॥१॥ भाव ते पांच प्रकार के सुनि बिभाव अ
नुभाव ॥ स्थायी सात्विक कहत है बिभचा
री कबि राव ॥२॥ विभाव लक्षनम् ॥ दोहा ॥
जिनते जगत अनेक रस प्रगट होत अनि
यास ॥ तिनसों बिमति बिभाव कहि बरन
त केसोदास ॥३॥ सब बिभाव द्वै भांति के
केसवदास बषानि ॥ आलंबन इक दूस
रो उदीपन मनुमानि ॥४॥ जिने अनंत अ
बलंब इते ते आवलंबन जानि ॥ जिनते
दीपति होत है सो उदीपन बषानि ॥५॥ आ
लंबन स्थान बर्णनं ॥ छप्पै ॥ दंपति जोब
न वंत रूप जाति लछिन जुत सषीजन ॥
कोकिल कें बलब संत फूल फल दल अ

लिउपबन॥ जलचरजलयुतअमलक
मलकमलाकमलाकर॥ चातिगमोर
सुसबद तडितघनअंबुदअंबर॥ सुमसे
जदीपसे गंधग्रहपानपानुपुरधानम
नि नवनत्यमेदबीणादिवसेआलंब
नकेशवबरनि॥ ६॥ उदीपन नामक
थनं दोहा॥ अवलोकनआलापपरि
रंभननखरददानि॥ चुंबनादिउदीपक
हिमर्दनसपरसप्रमानि॥ ७॥ अथअनु
भावलछिन॥ दोहा॥ अवलंबनउदीप
केजेअनुकरणबखानि॥ तेकहियेअनु
भावसबदीपतिप्रीतिविधानि॥ ८॥ स्था
ईभाव॥ दोहा॥ रतिहासीअरुसोकपुनि
क्रोधउछाहहिजानि॥ भयनिंदाविस्मयस
दास्थाईभावप्रमाण॥ ९॥ सात्विकभाव
दोहा॥ स्थंभस्वेदरोमांसचस्वरभगकंपैह
वैबर्ण॥ अश्रुप्रलयवषानियेआठौनाम
अनन्य॥ १०॥ अथव्यभिचारीभाव॥ दोहा
भावजुसबहीरसनमेउपजतकेआरा
य॥ विनातेमुतिनस्योंकहेबिभचारीक
बिराय॥ ११॥ निर्बेद ग्लानिसंकतथाआ
लसुदैनामोह॥ स्मृतिधृतिव्रीडाचपः

43

पलतासमैमदिचिताकोहै॥२२॥गरव
हरषआवेगपुनिनिंद्रानींदविषाद
जडतावत्कंठासहितस्वप्नप्रबोधवि
बाद॥२३॥दोहा॥अपिसमारमतिउग्र
ताआसतर्कअतिव्याधि॥उनमदमरण
भयव्याधिदेबिभचारीजुतआधि॥२४
अथहावलछन॥दोहा॥प्रेमराधिका
कृस्नकोहैतातेस्रंगार॥ताकेभावप्रभा
वतेउपजतहावबिचार॥२५॥अथहा
वनामकथनं॥दोहा॥हेलालीलाललित
मिदेबिभमविहतिबिलास॥किलकि
चितविछतिअतिकहीबिबोकप्रकास
२६॥मोटायतकुट्टमितबोधकोट
बहुहाव॥अपनेअपनेबुधिबलबरन
तकबिकाबिराव॥२७॥हेलाहावलच्छ
नं॥दोहा॥पूरणप्रेमप्रतापतेभलबलला
जसमाज॥सोहेलातिहिहरतहियराधा
श्रीब्रजराज॥२८॥प्यारीजूकोहेलाहाव॥
सवैया॥आवलोकनिमैंकुसमैंचितअनू
पभ्रमैंयुगपासभलैगलमेलो॥सहुहा
ससुबाससोजायमिलीवहजोन्हकी
जामनिसांझअकेली॥अधरामधुपाय

कियेबसकेसवकेसवरायकरीरति
रीतिनवेली बनतैंब्रषभानसुता
सुषही सुषहीहरिलेगईहेलेहेली
१९॥ क्रस्नकोहेलाहाव॥ सवैया॥ बेनु
सुनायबुलायलईवहभौनभुलाय
केभांतिभलीको॥ फूलिगयोमनुफूल्यो
विलोकतकेसवकाननरासथलीको
रूपमहामधुपानकरायकियोपरिरं
भनकामकलीको॥ हेलाहीश्रीहरि
लागरआजहेस्यामनश्रीवृषभान
ललीको॥ २०॥ प्यारीजीकोलीलाहाव
पाइनकोपरिबोअपमानअधानअने
कसोमानमनेबो॥ सीठोलबोरषवाय
बोषेबोविसषिचहोदिसिचोंकिचि
तबो॥ चीरकुचीलनठेपरिपोढिबोपा
नहीकेघुरकेभाजिजेबो॥ आषिनमू
दिकेसीषतराधिकाकुंजनितेप्रतिकुं
जनिजेबो॥ २१॥ श्रीक्रस्नकोलीलाहाव
सवैया॥ ह्रांकिहरोघनिमेचढिऊंचो
६ अटासनऊपरिदेषनधावै॥ निंदतको
पचरित्रकोंकहिकेसवधेनुककेगुन
गावै॥ चित्रतचित्रमेंआपनपोअवले
कितआनदसोंउरलावै॥ आंगनतेघर

मैघर तै फिरि आगनि तासुर कौं बि
र मावै ॥ २३ ॥ ललित हाव लछण ॥ दो
हा ॥ बोलनि हसनि बिलोकिबो चल
न मनोहर रूप ॥ जैसे लै सब रचियै ल
लित हाव अनुरूप ॥ २४ ॥ प्यारी को ल
लित हाव ॥ कोमल बिमल मन बिम
लासी निमल मन नही कीनि: कपट स
षी साषि कमला ज्यो लीनै षो छकम हा
लसनाल के ॥ नूपर की धुनि सुनि मौरै
कल हंसनके चौकि चौकि परै चारु
चेट वामराल के ॥ कंचन के भार कुच भा
र वार हार भार लचकि लचकि जात
कटि तट बाल के ॥ हेरे हेरे बोलत बि
लोकित हसति हेरे हेरे हेरे चलति
हरति मन लाल के ॥ २५ ॥ श्री क्रस्न जी
को ललित हाव ॥ चपला पट मोर कि
रीट लसै मघवा घनसो भवदावत है
मगुआवत आवो बेनु बजावत मि
त्र मयूरन चावत है ॥ उठि देषि भटू म
ति लोचन चातिक चित्त की ताप बुझा
वत है ॥ घनस्याम घनाघन बेष धरै जु
वै नैबन तै ब्रज आवत है ॥ २६ ॥ मेद

हावलछ्छनं ॥ दोहा ॥ पूरणप्रेमप्रताप
ते गर्बबेढ बहुभाव ॥ तिनके लछणवि
कारतेउपजतहे मंद हाव ॥ ३७ ॥ प्यारी
जी को मंद हाव ॥ छबिसो छबीली व
षभान की कुमारि आजरहीहुती रूप
मद मान मद छकिके ॥ त्यारहू ते सुकु
मार नंद के कुमार ताहि आयो री मना
वन सयान सब तकिके ॥ हसिहसि सो
हे करि पाइ परिबे को भये केसो राय
की सौं जब रहे जीव जकिके ॥ तिहूं स
मे उठे घन घोर घोर दामिनी लागी ले
टि स्याम घन उर स्यो लपकि के ॥ ३९ ॥
कृष्णजी को मंद हाव ॥ महि मोहनी मोहि
सके न सषी चपल चष चितवन बानत
हे ॥ रिति की रति क्यो हू न काम करे छु
ति मंद कला घटि जानत हे ॥ कहि केस
व मोर की बात कहा रमणी यर माहु न
मानत हे ॥ वृषभानसुता हित मित्तम
नोहरि मोरहि दीठ न जानत हे ॥ ४०
47

रस.
२८
48

अथ विभ्रम हाव ॥ दोहा ॥ बाक विभ्र-
म ए प्रेम ते जहां हुहि विपरीति ॥ दरसन
तन मर सरसि लगति विभ्रमै के गीत
२९ ॥ अथ श्री जू के विभ्रमै हाव ॥ कटि के
तट हार लिपटि लियो किंकिनि
लै उर सौं उर माइ ॥ कर नूपुर सौं पग्ग पौ
ची बिना अंगिया सु भ्रमै चर की बिस
रा राई ॥ कर अंजन रंजित चारु कपोल
करी जुत जावक नैननि काइ ॥ सुनि आ
वत ही ब्रजि भूषन भूषन भूषित होइ
हि दै पन धाइ ॥ ३० ॥ श्री कृष्ण को विभ्रमै
हाव ॥ नंद नंदन खेलत हैं बनगात ब
नाइ कि वृंदन के जल की ॥ वृषभान
कुमारि विलोकत ही रुचि चित्त मै वि
भ्रमै की झलकी ॥ गिरि जात न जानत पा
नन घात वारि कर पंकज की दल की
विहसी सब गोप सुता हरि लोचन मूरि
सुरोचि दृगंचल की ॥ ३१ ॥ अथ वितहा
व ॥ बोलन के समये विषे बोलन दे ह

49

ईल्लाज विहतिहावनासोकहतके सब्रकबिकबिरज ३२ ॥प्यारीको विहतहाव॥मेरकहेदहिये जतंउपि रि ग्रीषमजोहठदेहदहोगी पोरिवो प्रेमपरायेसमुद्रकोकरेहकंतकोक वलोनिबहोगी हंसोमेरेसगरी सजनीकवहूसमोहसिबातकहे गी पीचतकोचित्रसारीचढीचित्र कीपुतरीभयेकोलोरहोगी॥३३॥

प्यारीजूकोविहतहाव॥ केसोराइ सोआजुसखीवृषभानकुमारिउरा हनोदीनो गारदईअरमारदईअर बिदनसोमतकेहितहीनो सीख दईसुषपायलईतुलायसुगंधचढा यनवीनो ऊतरदेयकेनंदकुमार कछूसिरनाचेतेउचोनकीनो ३४

प्यारीजूकोविलासहाव॥ चिलक तुअलीकंजचिलकतिलकमिस विभमैनमोहैनमैमोनदेहदीने है लोचननिसोचनसकोचनन

रस०
२५
50

चाहतहै दसनचिमक हीचकितचितकी ॥
मोहै ॥ मदहासमुषबासअनियासहास
करिलीने के सोराय जियजघपिप्रवेनेहे
मोहनके तनमन मोहवे को मेरी सषीतेरे
मुषमुषहीअनंतव्रतलीनहे ॥ ३६ ॥ श्रीकृ
ष्णकोविलासहाव ॥ जिननिनिहारोजेनि
हारिवेकोनिहोरनकाहूनानिहारेजिनके
सहूनिहारेहो ॥ सुरनरनागनवकन्यानके
प्राणपतिपतिदेवतानिहूकोहूकेहियमेवि
हारेहो ॥ जैसेहिविधिकेशोरायरावराओसष
रगउपमानउपजीविरंचिपंचिहारेहो ॥ रू
पमदमोचमदनमदमोचनकित्रियव्रतमो
चनकिलोचनहिहारेहो ॥ ३७ ॥ किलकिंचि
तहावलछिन ॥ दोहा ॥ श्रमअभिलाष
सगर्वस्मितक्रोधहरषभयभाव ॥ उपजत
एकहीबारजहासोकिलकिंचितहाव ॥ ३८
प्यारीजूकोकिलकिंचितहाव ॥ कोनेत्रसे
विलसेसषिकोनाहिकापरिकोपिकेमोहसों
हचढावै ॥ भ्रलतिलाजभटूकवहूकब
हूमुषअंचरमेरदुरावै ॥ कौनकीलेतवला

यवलायपल्योतेरीदसायहमोहिनभा
वै॥ऐसीतोनकबहूनमंडेसबतोहिद
ईजिनिबायलगावै॥३९॥ हेलसकोकिल
किंचितहाव॥ऐसीहैगोकलकेकुल
कीजिनदछिननेनकियेमानकूलं॥घं
जनसेमनरंजनकेसवहारबिहारल
घ् लालजिहैरले॥बोलेजोकोउकैमान
बोलेफिरैविशुकेसेहियेमहफूले॥
रूपभयेसबकेसबकेऐसेकान्हकहो
रसकोनकेमले॥४०॥ विवेकहाव॥एक
समैसबगोपीसोकेसवकेसहुहासीकी
बातकही॥जाकहतातरहैतजितांहिक
हाहमसोरसरीतिनही॥सुकैयांप्रातिउत्त
रदेहसषीहगआसुनकीअवलीउमही
वरलायलईअकुलाइलईअधरातिक
लोहिलकीनरही॥४१॥ विछतिहाव
लछिण॥दो०॥भूषनभषिवेकोजहा
होरअनादरआनि॥ताहिविछतिविचा
रियेकेसवरायबषानि॥४३॥ प्यारीज
कोविछतिहाव॥स०॥ननआपनभाए

२९
52

सिंगार सिंगार उतोरेन जाही ॥ सब होत सुगं
धन है ति सुगंधसुगंधसे सुगंधजा ने सुभा
ही ॥ सबी भूषन है सब ताहि ते भूषित
भूषन ते तुम भूषित जाही ॥ ८४ ॥ कृस्न
को विक्षितिहाव ॥ सवैया ॥ पानन खाए न
पीकरची पलटे पटु चितु कहा धरि के के
हसरी बनमाल मनोहर हार उतारि धरे
भरिके ॥ चंदन चत्र सुलो पिके लोचन
चारु चकोर निसो लरिके ॥ अंग सुभाय
सुबास प्रकासित लोपि के के सब क्यो
करि के ॥ ८५ मोटाइत हाव ॥ दोहा ॥ हे ला
लीला करि जबे प्रगटे सात्विक भाव ॥ बु
धिबल रोकित सामिजे कहि मोटाइत
हाभाव ॥ ८६ ॥ प्यारीजी को मोटाइत हाव
पेलंत हे हरि वागे बने जहां बैठी प्रिया
हति तेम्रातिलोनी ॥ केसव के सेहु पीठि
मे दीठ परी कुच कुंकम कीरुचिरो नी
मात समीप हुराई भले तन सात्विक भा
व की गति न हुनी ॥ लेय सबे सुष पाय
भली विधि देषि सबे तन होर हीमो
नी ॥ ८७ ॥ कृस्न को मोटाइत हाव ॥ सवे

भोजनकोंवृषभानसभामहिबैठेहे 53
नंदसवेसुषकारी गोपघनेवलवी
रविराजतघातवनायवारीगिरधा
री राधिकाझांकिऊरोघनजोन्हसी
लागेगिरेमुरझायविहारी सारभयो
सकुचेसमुझेहरिबाईकह्योहरिला
गीसुप्यारी ४९ ॥कुट्टमितहावल
छ्न ॥दोहा॥केलिकलामेसोभिएके
लिकपटवहुरूप ईपिजतहेतहांकु
ट्टमितहावकविनकेभूप ५० ॥सवै०
पहलीहठरूठिचलीउठिपीठदेहोंचि
तईसषीलेनलषीरी पुनिधायधरेह
रिजुकीभुजानिलेछूटिवेकोवहुभांति
झषीरी केकुचपीडलदंतनषछतते
टिनकीमरजादनषरी ताहीकौपान
घवावतिहेउलटीकछुप्रीतिकीरीति
सषीरी॥५१॥अथवोधकहाव॥दोहा॥ग्
ढभाववेवोधजहांकेशवऔरहीहोय
तासोंवोधकहावदेहेसमकहतसयानेलो
लोइ ५२ प्यारीकोवोधकहाव वे
ठीहुतीवृषभानकुमारिसषीनकीमें

रस०
२१
54

उत्नीसिंट प्रवीनी॥ लै कुमला नो सोके जो
परीयकपाय नाय के गुवा दिन वृनी
चंदन सो छिरक्यो वह वा को पाव दिये
करुणारसभीनी॥ चंदनचन्द्रकपोलहि
लोपि के मंजन ओंजि विदाकरि दीनी
५३॥ श्री कृष्ण को बोधक हाव॥ सखि मोहन
गोप सभा महि गोविंद बैठे हुते दुति को
धरि के॥ जनु केशव पूरण चंदल से चित
चारु चकोर नि को हरि के॥ तिन को उल
टो करि आनि दियो कहि नीरज नीर हि
में भरि के॥ कहि का हे ते नैन नि हार मनो
हर फेरि दियो कल का करि के॥ ५४॥ राधा
राधारमण के कहे ज्यामति हाव॥ ढिठई
केशवराय की ...मियो कवि कवि राव॥ ५५

इति श्री मन महाराज कुमार इंद्रजीत वि
रचितायां रसिकप्रियायां हावकथनं ना
म षष्टमो प्रभाव॥ ६॥ ॥ दोहा॥

बाढे रति मति अति बढे जाने सब रस रीति
स्वारथ परमारथ मिले रसिकप्रिया की री
ति॥ १॥ अथ अष्टनायका॥ दोहा॥ स्वा
धीनपतिका उत्कला वासकसज्जा नाम
अभिसंधिता बखानिए और खंडिता बा

स्वाधीनपतिकाकोलछन ॥ दोहा ॥ केस 55
वजाके गुनवध्योसदारहे प्रियसंग ॥ स्वा
धीनपतिकातहितहोंबरणतप्रेमपरसं
ग ॥ २ अथउदाहरनस्वाधीनपतिका ॥ के
ज्यो सवजीवनकोवजिकोपुनिजीवहुतो
मानिवायुहिभावे ॥ जापरिदेवकौदेवकु
मारनिवारनवरनमाइलगावे ॥ ताहिरि
पेतगवारिकीबेटीमहापरिपायछुवाय
दिवावे ॥ होतोवचीमनहासनकेमिसि
ओरजोदेखेतोउतरआवे ४ ॥ प्रकास
स्वाधीनपतिका ॥ चोलीकोसोपानतो
हिकरतसवारहारमुकरजोतोहीमहि
मरतिसमानीहे ॥ तेहीत्रियदेवतापेपावो
पतिकेसारायपतनीवहनृपतिदेवताव
मानीहे ॥ तेरेहीमनोरथभगीरथकेपाछे
पाछेउलितगुपालमेरोगंगाकोसोपानी
हे ॥ असीवातकोनजुनमानेसुनिमेरीरा
नीवनकेतोलरीबानीदेवकीसीबानीहे
५ ॥ अथउत्कंठितालछिन ॥ दोहा ॥ कोन
हुमीहेतनआयघोप्रीतमजाकेधामु ॥
ताकोसोचतिसोचहियवकताकेसवबा
म ॥ ७ ॥ प्रछनउकत ॥ विश्रोगहकाजेकि

रस० किधौंअलकाजकिनछूटितिसघासमा
२८ जकिधौंकछुआजुवतवौसुरमिमातते॥
56. दीनौतेनसाधुकिधौंकाहूतेभयौविरो
धुउपज्योप्रबोधकिधौंहियअवदाततै॥
सुषमैनदेहकिधौंमोहीस्यौंकपटनेहकि
धौंदेषिमेहूडरेसषीअधरातिते॥किधौं
मेरीप्रीतिकीप्रतीतलैतकेसौरायअहू
नआएभौनसधौंकौनबाततै॥८॥प्रका
सउकता॥सुधिभूलिगएभूलयेकिधौंका
हूकेभलेइडोलतबाटनपाइ॥भीतभयेऽ
किधौंकैधौंकेशवकाहूसौभटभईकाहू
भामिनिभाइ॥आवतहेमघुआयगएकि
धौंआवहिंगेसजनीसुषदाइ॥आएनन
दकुमारविचारसुकौनविचारअवारल
गाइ॥९॥अथवासकसंज्ञा॥दोहा॥वा
सकसज्जाहोइसोकहिकेसवसविलास
चितवैरतिग्रहद्वारत्यौंपियआवणकी
आस॥१०॥प्रछन्नवासकसज्जा॥सवै०
वेदनविपटपुवपुकोमलअमलदलव
लितललितलतनपटीलवेगकी॥केसो
दासतामेदुरीदीपगसकासीदेषिहुरव
तिनीलवादुताकसंगअंगकी॥पेषीपांन
पेषिपसुसवजितिजितहोततिततित

चो कि चाहै चोप अंग संग की ॥ नेदला
ल आगे मुखि लो के कुंञ्ज जाल वादन
लीनी गति तिहि काल पंजर पतंग की
प्रकास वासक सज्जा ॥ सवैया ॥ भा
षती है सुख बैन सखी सुहू लास हिये
अभिलास न मो है ॥ कोमल हास न नै
न विलास नि अंग सुबासन के मनि
मो है ॥ मूरति वे न कि धौं तुरसी तुलसी
बन मैं रति मूरति को है ॥ कुंज बिराज
त गोप वधू कमला जनु कंज कुटी महि
सो है ॥ अथ अभिसंधिता ॥ दोहा ॥ मा
न मनावत है जु करै मानद को अपमान
दूषन दुष तन विनल है अभिसंधिता
वषानि ॥ १३ ॥ प्रछन्न अभिसंधिता ना
र बार बोल्यो जब बोल्यो न बुलाय तब
बालक ज्यौं बोलिबे को बिलकत बिल
लातु है ॥ ज्यौं ज्यौं परे पायन त्यौं त्यौं पाहन
ते पीन भयौ होत कहा अब कियेमा षन
हो ज्यात है ॥ के सो हास छाडि कियो हठ
ही सो है तु ता हूं छाडि जियो जियो बिन
आव कहा जात है ॥ ऐसे प्यारे प्रीतम
को मान्यो न मनायो तब ऐसो तो हि प्र
छिये जु पाछे पछितात है ॥ १४ ॥ प्रकास
अभिसंधिता ॥ सवैया ॥ पायपरे हु न

रस. २९
58

प्रीति मज्यो कहि क्योंमव कैधो हुनमें हग
दीनी ॥ तेरीसखी सिखई सिखए करो व
ही की सिखि सीष ज्ञ जानी ॥ चंदन चह्य स
मीरसरो ज जेरहु षभाइसु षहीनी ॥ मैउल
टीजकरी विधि मोक हु न्याय नही उलटी
विधि कीनी ॥ २५ ॥ खंडिता लछन ॥ दोहा
आवन कहि आवे नही आवे प्रीतम प्रात
जाके घरिसो खंडिता कहे सुबहुत विधि
तात ॥ प्रकास खंडिता ॥ आंषिन जो सुम
तन कानिन लो सुनिय तके सोराय जे से
तुमलो कैसे गए हो ॥ नंद की तिमारी सु
ध्धिका गज्यों चुनत फिरे जेठ सीठे सी ष
सठ ईठ ढीठ छाये हो ॥ दूरि दूरि करती
हो दोरि दोरि गहो पग जानो न कुठेर
गेर जानि जाय पाये हो ॥ का को घर बा
लि बको कहा वैसे घन स्याम घर घर ज्यो
घुसत प्रात मेरे घर आए हो ॥ ५ ॥ प्र
छन्न खंडिता ॥ आज कछु अषियां ह
रि ओर सी मानो महावर में जुरंगी है ॥
मोहन मोह सी ला लै गति मो हिय ते
पर मोहन मो हि लगी है ॥ मोरी सोमो
सो हु मान हु बेगि हिये रसरो स की रीति
जगी है ॥ मेरे वियोग के तेल ची कि हु केस
घो

व कामपगी है ॥ १८ ॥ अथ प्रोषितप्रेयसी ॥
जाकी प्रीतम मुदेस अवधि गायो कवन हू का
ज ॥ तासों प्रोषित प्रेयसी कहिं बरनत कविरा
ज ॥ १९ ॥ प्रछन्नप्रोषिता ॥ केसव के सहु परब
पुराण मिल्यो जन भावतो भाग भस्यो री ॥ जा
ने को कहाँ भयो कैयाहू जो औधि को आध
कु घोस टस्यो री ॥ ताकहुं तूलत उहसिवो ले
न उ मेरो मोहन पाय परयो री ॥ कांचन हू ते
हव वेरो कठोर है ते विरहानल हूं न जस्यो
री ॥ २० ॥ प्रकासप्रोषितप्रेयसी ॥ औधि दे०

ए का। कवित चवैछा उजन देखि करि पानो छो
ड़्यो छै जैसइ पानो वधि गयो छइ ऋम मति ल्या
ज्यो

रसक
३०
60

प्रकासप्रोषितप्रेयसी ॥ सोधि देखा ए वहां वनकोंव हभो जनकेसवही हम से है । ताकोसुतो सवलोवहराईको सषीवरास मरुकरमे है ॥ बैठकहाय नकी टिगके सवजाहुनही कोइजाय जु के है ॥ जानतहो तुम साथिनतेसु वाउमगे वहुस्याफुनि रे है ॥ सप्रथविप्र लुब्धा ॥ दोहा ॥ दूती सो संकेतकहि लै न पठाइसाप । लुब्धाविप्रसु जानिए सा न साथे संताप ॥ २२ ॥ प्रछन विप्रलुब्धा

सूलसे फूलसुवास कुवाससी भाकसी सिसये भौनसमाजे ॥ केसव बागुमहाव नसो जुरसी चढि जोन्हसबैसगदागे नेहलग्या उरनाहरसो निसिनाहु घरी कि वकुसनुरागे ॥ गारि सो गीत वीरी विसु सी सिंगारइ संगार संगारसे लागे ॥ २३ ॥ प्रकासविप्रलुब्धा ॥ देषत उदधि जात हबि देषिनिज गात चंपक केपात कछु लिख्यो हबनायके । सकलसुगंधउारि दूतिकाकोंमारि पुनि फूलमाल्यातोरि डारि वीरी वुगरायकै । लैलै दीहसास तजिविविधिविलास सवसाखके सोदास चलीसकुलाइके । नयके संकेतसद कान्हजीसोबोलि ऊनेमासोकरजे

रि दूनो दूनो दुखपाइ है ॥२४॥ अथ प्रेमा
भिसारिका लछिन ॥ दोहा ॥ हित तें के
मद मंद तें पिय कों मिलै जु जाय ॥ सो क
हियें अभिसारिका कविजन कहे बना
य ॥२५॥ प्रछन्न प्रेमाभिसारिका ॥ सवै
या ॥ लीनें हम मो लक्ष्मन बोले आय जा
न्यो मो हि मोहि घन स्याम घन माला वो
लि लाई है ॥ देख्यो है हे दुख जहा देह हून
देखी परे देखि के से बाट के सो दास नी दि
खाई है ॥ ऊंचे नीचे वीचि कीचि कंटकन पी
रिपग सोह सग यद गति अति सुखदाई
है ॥ भारी भयकारी निस निपट अकेली
तुम नाही प्रानना थ सो प्रेम जु सहा
इ है ॥२६॥ प्रकास प्रेमाभिसारिका ॥
सवैया ॥ नैनन की आतुराई बैनन
की चातुराई गात की गुराई न दुरलिग
ति चाल की ॥ अपने चरित्रन को चित्रत
विचित्र गति चितनी ज्यो सोहै सो छ्वि
पुत्रिका गुपाल की ॥ चंदन के समान चा
र वाय सो चढी फिरत करिके तिहारे म
न गनेली ॥ नीपाल की ॥ की जे पय मान अ
रघे जे पान प्रानपति आई है जु आई अ
लबेली ग्वालि बाल की ॥२७॥ प्रछन्न

३१

62

गर्वेभिसारिका॥ लाडली ली कुसुतोस
बही तुम लाल कहा तुके आगिलगाई
के॥ आजु लोक प्रभु के से हूल्लै कहिला
गनदे तन न देषो आये कै॥ बेगि चलो उ
ठि आय लि वार्लन दोरि अकेली यहो म
कुलाय कै॥ भलि हो गो कल न गाव मे गो
बद की जग मरर नगाय चराय कै॥ ३८॥
चंदन चढाय चारु अंबर के उर हार सुभि
ल सिंगार सोहे आनंद के कंद ज्यो बारो
कारि राति नाथ बीने मेव आवे गाय संग
जमराल साथ बानी जग बंद ज्यो॥ चो कि
चो कि चकई सी लालिन की दुति चली मा
तो भई दीन आषिं द दुति मंद ज्यो॥ तिमर
वियोग भले लोचन चकोर फूले आइ व
जि चंद वंद्रावली चंद ज्यों॥ ३९॥ अष्ठ न्म
काम अभिसारिका॥ उरम तउरग चं
पल फिन चरन नि देषत न विधि निसिच
रदिस वारि के॥ गनति न लगन मुसल
धार सुन तन न फिलीगन घोष निवधारि
के॥ जानत न भषन गिरत पट फाट
लन कंट की आट कठर उर जउ जारि के

प्रलन की पूछे नारि को नेपैं नूसीलीय
ह जोग को सो सार अभिसार के ॥३०॥ प्र
कास का भाभिसारिका ॥ गोप न ऊे वऊे
वे ठे अथायन के सदन को रिसभा अवगा
ही ॥ खेलत वालक जालग हीन मे लाल
विलोकि विलोकि विहाई ॥ आवती जा
ति लुगाई चहू दिसि घूघट मे पहिचान
न छांही ॥ चंद सो आनन काटि कहा च
ली सरू न है कधु तो हि कन्हाई ॥३१॥ दोहा
के सव दास आसतीन विधिवर नी सुकिया
नारि ॥ परकीया है भांति की पुनि आठ अ
ठ अनुहारि ॥३२॥ उत्तिमम ध्यमआधमत्रि
य तीन तीन विधि जानि ॥ प्रगट तीन से सा
ठि त्रिय के सव दास सुजान ॥३३॥ उत्तिम
मान करै अपमान ते भजै मान ते मान ॥
प्रिय दे वै सुख पाव ईला हि ठ समाजान ॥३४
होय कहा अव के समझे समुझे न न वै जव
है है समुझाये ॥ एक ही बंक विलोकन मां
हि अनेक अमोल विवेक विहाय ॥ जान
प्रवीन जना व हु जर जन माव धिलो बीहि
जान हू पाए ॥ वात बनाय बनाय कहा क
हो ल्यो ह मनाय मनायज्यो आए ॥३५

रस०
३२
64

दोहा॥ मान करै लघु दे षलै छांड़ि बहु तप्रमान॥ के सो दास बषानियहु ताहि मध्यमानाम॥३६॥ अथ मध्यमलछण॥ सवै०॥ भूलेहू सुधे न ही चितयो इहं कान्ह कीयो लचि ज्वाल चकेलो॥ हा हा कहारी रहे पुनि केशव पाय परे तो परे इहं रहेलो॥ होलो इहं तव ही की विचारत होत गुमान को एलो हीछेलो॥ लों वी लै टेक रूपा तरी देह जो ने कवडी विधि ज्यां छिन देलो॥३७॥ अधमा लछण॥ दोहा॥ रूठ बार ही बार जो रूठ वे ही काज॥ नाही सो अधमा सवै कहि बरनत कविराज॥३८॥ काटो कपटु सु कान्ह सों कीजे री वारो वे बोल कु बोल कसाई॥ फारि वे घूघट बोउ अटे सों ईडीठि फिर अवके जो धसाई॥ के सव सो सीस षीन को माराति षे केक रे हित की जु सहाई॥ बार ही बार को हूस मैं वारो वहाई सुबुधि प्रयोग बसाई॥३९॥ दोहा॥ इह विधि नाइ कनाइ का बरन हु सहित विवेक॥ जाति काल भय गावते केशव जानि अनेक॥४०॥ [illegible]
ते

तजित
रूनी

नीसंबंधकी जानिमित्र द्विजराजु ॥ राखि
येयदु खभूखते ताकी त्रियते भाजु ॥ ८१
अधिकवर्ण समयतघरि अंत्यजजनकी
नारि ॥ तजिविधवा आरि सुद्धिनारमियोर
सकविचारि ॥ ८२ ॥ यहसंजोग सिंगारकी
केशव बरनीरीति ॥ विप्रलंभ सिंगारकी
रीति कहौं करिप्रीति ॥ ८३ ॥ इतिश्रीमन्मम
हाराजिकुमार श्री इंद्रजीत विरचिता
यां रसकप्रियायां संभोगसिंगार वर्णनो
नाम सप्तमो प्रभावः ॥ ७ ॥ अथ विप्रलंभ
सिंगाररस लछण ॥ विछुरत प्रीतमप्रीत
मा होत जु रस तिहठौर ॥ विप्रलंभ सिंगार
कहि बरनत कवि सिरमौर ॥ १ ॥ अथ विप्र
लंभ भेद कथनं ॥ विप्रलंभ सिंगारको च्या
रि प्रकार प्रकासु ॥ प्रथम पूर्वानुराग पुनि क
रुणा मान प्रवासु ॥ २ ॥ प्यारीजूको पूर्वानुरा
ग ॥ फूलनि दै घाउ सूलन फलति है हारि चि
तिदूरकरि माला वलि व्याल सी लगत है
चंदन चढावो जिन तापसी चढत तन कुं
मन लावें अंगराग आगि सी लगत है ॥ बार
बार बरजती हौं वारी है लुवारी सी आनि
बारी न वायु वारी विस सी लगति है
चवरो चलावों न निवि जन नैन हलावो लोगे के सब सुगंध वा ॥
त बायसी लगति है ५

३३ प्रकास पूर्वानुराग राधा को ॥ केसव
66 कैसहु ईठन दीठ परत वैतैरति
ईठ कन्हाई ॥ ता दिन तै मन मे रा-
कौ आनि भई सु भई कहि क्यो हू न
जाई ॥ होइगी हासी जे आवै क
हू कहि जानि हित हित पूछन आई ॥
कैसै मिलि प्यारी मिले बिन वैचार हूं नैन
निहि तिहिये उरपाई ॥ ५ ॥ श्री कृस्न को प्र
छन्न पूर्वानुराग ॥ एक समै वृषभान सुता
सखीगन मै जननी संगि बैसी ॥ जाय
उन्हे चितयो तिहि रीति सु प्रीति हिये कहि
जाय न तैसी ॥ ता दिन ते जग की जुवतीन
की लागत केसव भांति अनैसी ॥ चाहि पि
स्यो चित चकचहून कहुं तिदेषिये वासु
ष कैसी ॥ ६ ॥ श्री कृस्न को प्रकास पूर्वानु
राग ॥ भांति भली वृषभान लली जव तै अ
षियां अषियान सो जोरी ॥ भोह च ढाय
कछु उरपाय सुबाय लई हसि केसव भो
री ॥ केसव कान्ह त्यो ता दिन तै रुचि कै न
विलोकति केतोनि होरी ॥ लागतु है स
व ही के सिंगार सिंगार न ज्यों विन चंद
चकोरी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अवलोकनि आ ३३

लापते मिलिवेकों आकुलाय॥ होतद
साद सविनु मिलै केशव क्यों कहि जाय॥ प
अथ स्वाद सकथनं॥ अभिलाष सुचिं
ता गुन कथन स्मृत उद्वेग प्रलाप॥ उन्मा
द व्याधि जड़ता भये होत मरन पुनि आय
९॥ अभिलाषलक्षिन॥ नैन बैन मन
मिलि रहे॥ चाहे मिलै सरीर॥ कहि
केसव अभिलाष यह बरनत है कबि
धीर॥ १०॥ प्यारी जू को अभिलाष॥ सु
धि बुधि घटी दुति देह मिटी दिन ही दिन
चाहियो बाढति सी॥ कछु केसव आप
नै पेटकी पीर दुरावति पै मुष काढति
सी॥ विसरयो सुष भूष सषी निसनीद
परी चित चाहन आटति सी॥ रिग योक
छु गांठि लै छूटि छबीली सु का है ते डोल
त डाटति सी॥ ११॥ श्री कृष्ण राधा जी को
प्रकाश अभिलाष॥ जो कहु देषे लगै दि
षसाध दिषावत हो दिन ही दुष पै है॥ या
ही मे केसव देषिये बोलत देषि हो दे
षि सषी गब का है॥ योवन को दुरि दे
षि हो देह ज्यों आपने देहन देषन दे है

देषिबेकोवहरावतीमोहिसोवकहाक
छुदेषिलेहे ॥ २२ ॥ कृष्णकोअभिलाषप्र
छन्न ॥ पोयपरौवलिजावमनोहरिआ
पुनसीलकरैअवुलाहु देषेआघातन
हीदिनकेफिरिबारकिधौंअनदेषेहु
जाहु ॥ सोसोकहीसकहीअबकेसवके
सहुकाहुपलाउलोकाहु ॥ ठाउहुंगेज
कहुकइतीसचितालोहैनेकछिरायके
धौषाहु ॥ २३ ॥ प्रकासअभिलाषकृष्ण
को ॥ है ॥ कोइमाइहिनेमयनकीइहजा
यकहेकिहिबाधवहेहो ॥ न्यायहीके
शत्रुगोकुलकीकुलटाकुलनारिनिन
वावलहेहो ॥ देषरीदेषलगायटनीइ
नसोनेसोदाहिअघातिरहैहो ॥ कोहि
रीकोजैसेजाननिनाहिवकालिहही
काकेसंदेसकहेहौं ॥ २४ ॥ गर्भचिंताल
छन ॥ दोहा ॥ केसेकेमिलियेमिलेह
रिकैसेवसिहोय ॥ यहचिंताचितचेति
केबरनतहैसबकोय ॥ २५ ॥ प्रछन्नया
दोहा शीकीचिंता ॥ आपनोउतनआपनोहोत
नदेषैजाहिंआपनहीतुमआपनोको
मनकरिहेनाहि ॥ २६ ॥ राधाकीप्रकास
चिंता ॥ प्रेमभयभूपरूपसचिवसको

चमोचविरहविनोदपीलपेलियतपचि 69
के॥ तरलतरंगअवलोकनअनंतगत
स्थमनोरथरहेहैंपेदागनगचिके॥ दुहुऔ
रपूरीजोरघोरघनीकेसोदासहोइका
कीजीतिकोनहारेहियलचिके॥ देषत
तुम्हेंगुपालतिहकालेबहिबालउरसत
रजकीसीनाजीरापिरचिके॥ ७॥ श्रीह
सकीप्रछन्नचिंता॥ केसवदाससकलसु
वासकोनिवासतनुकाहिकबसकुटीबि
लासत्रासछीलिहे॥ केसोहैसुदिनवड
भागीअनुरागीजिहमेरीदृगवाकेसंगिला
गीलागीडोलिहे॥ औसीहैहैहंसपुनिआप
नोकदाहमगमदघनसारससमेरउरबो
लिहे॥ दीपकेसमीपसदीपतिविलोकेव
हचित्रकीसीपूतरीधोंक्योहहसिबोलि
हैं॥ ८॥ श्रीहसकीप्रकासचिंता॥
को राधिकाकीजननीजननीकोसुक्यों
हुसुयंबरबातसदावे॥ देवकुमारसेगो
पकुमारनमानदेदेवसभानबुलावे
केशवकैसेहैहुबालभलीरहमालसु
मेरेहियेपहरावे॥ लोहिसपीसमदेस
गताकेसुक्योहहबातसबेबनिआवे
ध

१९ ॥ ग्रथ गुमानक थनं ॥ दोहा ॥ जिह
गुण गन नननि देह दुति बरनत बचन वि
सेषि ॥ ताकों जान हु गुनकथन मनुमथ
मथव सुलेषि ॥ २० ॥ प्यारीजुको गुन क
थनं ॥ खंजन से मन रंजन के श्रवरंजन
लैनकि धोमनजी की ॥ मीठी सुधाकी सु
धाधर की दुति दंतिन की किधो दाडि
मही की ॥ चंद भलो मुखचंद किधो सखी
स्रराति काम की कान्ह की नीकी ॥ कोमल
पंकज के पदपंकज प्रान पियारे की मूर
तिपी की ॥ २१ ॥ राधाको प्रकासगुन कथनं
कीरति सहल निति के सब कुंवर कान्ह के
वलभ की जिन पति सोमसमानिये ॥ कुव
त चंपक पात कुमिलात जात तनं कांति
ही हरिष गात हरि जूको जानिये ॥ कोम
ल सुबाहु जु तप्यारे केमप्रेमपानि कंटिक
न विसाल चारु मदनगुपाल जूके मद
नसर निदर स नरस हानिए ॥ २२ ॥ श्रीह
रिको गुनकथनं ॥ यों कहै के सब सो मस
राज सुधासम अंगनि देह दहै है ॥ दाडिम
के फल श्रीफल विद्रुम हाटक कोटिक क
ष्ट सहै है ॥ कोक कपोत करी अरि के ह
रि कोकिल कीर कुचीर कहै है ॥ अंग

अनूपमवात्रियकेउनकीउपमाबहु बे
हू रहे है ॥ २३ ॥ हूलसकोप्रकासगुन कथने
लोचनवी चिवुभीरूचिराधेकीकेसव
कौंहसुजातन काटी ॥ मानहुमेरेग ही
आनिरागनिकुंकमपंक कलंकतेगाढी
मेरीहीलागिरहीतनु नाजिनेयोदुति
नीलनिचोलकीबाढी ॥ मेरे हीमानुहि
ये कहहसघतयोअरिविंद दियेमुषठा
ढी ॥ २४ ॥ अथ स्मृति लछनं ॥ दोहा ॥
और कछु न सुहाय जहा भूलि जाय सब
काम ॥ मनमिलिवेकी कामना ताही
कौस्मृतिनाम ॥ २५ ॥ राधाकी प्रछन्नस्मृ
ति ॥ बोल्योसुहायनषेल्योहस्योअरु
देष्योसुहायनदुःखबढोसो ॥ नीकी
येवातसुनेसमझैनमनोमनकाहुकेमो
हमढोसो ॥ केसवदूठतीहै मनमैमति
मूढभयेगुनगूढपढोसो ॥ कोकैरेसाज
वजावैकोबीनहियाकौकछूचितचक्र
चढोसो ॥ २६ ॥ मेरे मिलायेहीपैमिलि
हौमनमोहनसोमनमोहनदीजे ॥ मौन
हीमौनबनैनकछूअबकैमनमान
दकेरसभीजे ॥ जैसेहीकेसवकैसेजी

राम
३९
रस०
72

बोल्यो हो पान न खाहु तो पानी पीजे ॥
जानि है कोऊ कहा कहि येतव सोच न
एतो संकोच न कीजे ॥२७॥ श्री कृस्न की
प्रसन्न स्माति ॥ सवैया ॥ घोर घनो घ
नसार घस्यो घनस्याम सु चंदन छूत न
फूल्यो ॥ केशव कुंज को कूल चितै प्र
ति कूल भयो सुभ फूलन फूल्यो ॥ भूले
सो डोलत बोलत नाहिं ने जानत कितै म
न संभ्रम भूल्यो ॥ जानती हो हम काहू के ध
ख्याज मनो हर हार हिंडोर निं झूल्यो ॥
२८ ॥ श्री कृस्न की प्रकास स्माति ॥ सवै०
बासन बास भई विस केशव ड्रासनि
ड्रासनि की गति लीनो ॥ चंदन चांदनी
त्यों चित चाहे न चंद्रक चंद्र चितौ रस
भीनो ॥ पान न खात न पान करै क
छु हास विलास सबै दुरि कीने ॥ ऐ
सी है गोकुल की कुलटा जिनें गोकु
ल नाथ कि वे हग कीने ॥२९॥ उद्वे
गलछणं ॥ दोहा ॥ दुष दायक कहै जा
य जहां सुष दायक आन यास ॥ सो उ
द्वेग दसा दुसह जाने केसव दास ॥३०

73

प्यारीजूकोउद्वेग॥सवैया॥चंद
नहीबिसकं दहैकेआवराकुइही
गुनलीलनलीनो॥कुंमजपावन
जानिआपावनमोरेपियोपाचेजा
निनदीनो।यासोसुधारसेषबिष
धरनवधस्योबिधिहेबुधिहीनो॥
सूरसोमायकहाकहियेयहपापी
जुआपबराबरिकीनो॥३१॥प्रका
स उद्वेगप्यारीको॥केसवकालिबि
लोकमभीजीवहआजुबिलोकेवि
नासुमरेजु॥वासरबीसुविसेविसु
मीउयेरातिजुन्हायकीज्योतिजरे
जू॥पालकतेभुवभूमितेपालकआ
लिकरोरकलानकरैजू।भूषनदेह
कछूब्रजिभूषनदूषनदेहकोहेरिर
हेजू॥३२॥कृष्नकोउद्वेग॥सवैया॥s
साचिसषीभरिलेतविलोचनकोपल
देषतफूलेतमालहि॥भूलेसेडोलल
बोलतनाहिनबारगयेकिधोतेरेही
तालहि॥देष्योजोचाहतदेषनआवत
ऐसोमैहोनदियोउरीलालहि॥आ
जकहादिषसाधुलगीजबदेष्योकछु

रस. ३७ नसुहातगुपालहि ॥३३॥ कृस्नकोप्रक
स० हेत ॥ मेघनज्यौंहुलिहंसनिदोरत
74 हंसनज्यौंघनरूपनपीवै ॥ कंजनज्यौं
चितचंदनचाहतचंदनज्यौंकुंजनकौं
हुनछीवै ॥ तालतेबागनिबागतेंताल
नितालनतमालकीजातिनसीवै ॥ के
सीहैकेआवबेजुवतीसुनिऐसीदसा
पियकीपलजीवै ॥३४॥ अथप्रला
प ॥ दोहा ॥ भवतरहैमनभवरज्यौंहैतन
मनपरताप। बचनकहैपियपछसोंता
सोंकहतप्रलाप ॥३५॥ प्यारीजूकोप्र
लाप ॥ खेलनहांसिनखोरिअठावनवै
नरहेतनहियेकंपरोसो ॥ लैनोनंदनौ
हलाभवभलानहिनातानगातकहा
कहौंतोसो। आनिदियोमुखमेंदुखके
भावकेसौंहसोंरीकहाकहौंकोसो। नै
नभरेभरिग्वालिकहेआरीदेखोतोका
न्हकहाकह्योमोसो ॥३६॥ कृस्नकेप्र
छन्नप्रलाप ॥ नीलनिचोलदुरायक
पोलविलोकतहीहियेआलिकलोही
जानिपरीहासिबोलनिभीतरिभागि
गईअवलोकतिमोही ॥ रूठिबेकी ३७

जकी लागी है कान्ह हिके सब कैरुचिरूप
लिलाही ॥ जोर सकी सो न वाकी सौं तो
हि कि नारलगी कहि मारी सौं कोही ॥ ३७
कृष्णको प्रकास प्रलाप ॥ मोहन मरीचि
कासो हास घनसार कोसो वास मुष रूप
की सी रेषा ज्ञान दात हैं ॥ केशोदास बे
नी तोत्र वेणी सिव नाय गुही ताम मेरे
मनोरथ मुनि से अन्हात हैं ॥ नेह उरज
सैनैन देषि वको विजु के से षिरकी सी
मो है उच्च के से उर जात है ॥ देवी सी बना
य विधि कोनकी है जाय वह लेरे घर आ
य आजु कालि के सी ना तु है ॥ ३८ ॥ उनमा
द लक्षणं ॥ दोहा ॥ लरकि उठे उनि उठि चले
चितरे मुह कौं देषि ॥ सो उनमाद जगाव ई
रा ते हसे बिलेष ॥ ३९ ॥ राधिका कौ प्रछ
न्न उनमाद ॥ के सव चो कि तिसी चित है
छितयां धरके लरकै ताकि छांही ॥ बूझि
ये औरकहे मुष औरसी और सी और म
है पल माही ॥ दीठ लगी किधौ बाय लगी
मन भूलि पर्यौ कि कर्यौ कछु काही ॥
घूघट की घटकी हरि आजु कछू सुधि
राधे कौ नाही ॥ ४० ॥ राधिको प्रकास उन
माद

रस॰
ध्रु
76

कैलब सुधि बुधि सिद्धि हरी तुम निनि
विथा अगाध राधिके हबारी छूटी॥ त
टत कातितट चितवनिनी है निधि दि
ठि करष्याडी॥ तरकति तकति तोरि
तनु तरफाति अतअपार उपचारान
डाटी॥ सकसका तलैलै सास अचेत
सुचेत हूं प्रेम प्रतगहि गाठी॥ ४१॥ अ
थ कोप्रछंनउन माद॥ गूढ अगूढ प्रका
सतीबात निलोक अलोक की बात स
रीसी॥ रोवति है कबहू हसि आवति नां
चत लाज की छाडि छरीसी॥ काहू को
सोचस को चनके प्रावदेषत आवेत
देह मरीसी॥ बाम की बाय की काम की
वाम की है हरि की मति काहू हरीसी ४२
श्री कृस्न को प्रकास उनमाद॥ सवैया
सजलचकित चितवत चित चहुदिसि
चाहि चाहि रहे मुष चपल चलत धाय।
सोचत से मन मन कंपत तपत तन केसी
दास रोवत हसत उठे गाय गाय। चलि
दिषाई नाहि देषत ही भय माहि भयो
सु कहत आयतो सों अलीऔ कुलाय
जैसे कछु आक बाक हती है गाजु ह
रि लै से जिन नाउ मह काहू को निकरि

जाय॥४३॥ अथ व्याधिलछण॥ दोहा॥
अंग वरण विवरण जहां अति ऊंचे उसा
स॥ नैन नीर पर ताप बहु व्याधि सकेस
वदास॥४४॥ नैन न ज्योति न बैन तें बो
लें न वैन विलोक तबुधि भगी है॥ बैन सु
नें समझें न तू बात हि प्रेत लग्यो किधो प्री
ति जगी है॥ केशव वै तो हि तो हि रटे रट
तो हि इतें उन हीं की लगी है॥ वे भये पान
न पान्यो न तू सुतें कान्ह ठगी कि तो का
हू ठगी है॥४५॥ श्री कृस्न की व्याधि॥॥
हों वन के तन तापन तापिये यहाँ यन
के उपचार जु औषे॥ वहां वन के उडिये
ये उसासनि स्वान के भास वानस न्हैये
के सव बैन दलाल निये दव भान लली
ये निंदान पेये॥ एक ही बेर दुहुम कहा
भयो मायरी हू बलि देखि डरैये॥४६॥
अथ जडता लछण॥ दोहा॥ भूलि जाय
सुधि बुधि जहां दुष सुष होय समान॥
ताहीं सों जडता कहत है केसव दास सुजा
न॥४७॥ बरे उपचार घरी सिघरी सी यरते
सराय घरी तन छीजे॥ जे समें जोर कि
येते कछु उपजे तो सके लिकहा हमली
जे देष तहीं यह काम कली कुमिलानी

१०
३९
78

ये जानि कहा अब कीजै ॥ कौन ये जाऊं कहा कहौं केसव केसे जो वेयह कौ हमजीजे ॥ ४८ ॥ राधिका की प्रकास जठता ॥ सषियौ न मिली सषियान मिली पतियां बतियां न मिली तजि मानै धान विधान मिली मन ही मन यो मनोरंक मनोमय सोनै ॥ केसव केसे हु वेगि मिलो तन हेह वहे ऊरि जो कछु होनै ॥ पूरन प्रेम समाधि मिली यह जे हे तुम्हें मिलि हो तब कोनै ॥ ४९ ॥ कलकी प्रछन जठता ॥ सवैया ॥ पहली पलसी तन हो तसरी रबि चारि समेऊपचार निधानै ॥ जो करिये तनु षंडन षंडन चित्त कछु सुष दुष न जानै ॥ केसव कान्ह सुनै समुझे नहि बूझिये कोन ही कोयह मानै ॥ जोग लियो कुविजोग है काहू को लो

ग गक कहा इन रोनि जानै ॥ ५० ॥ कान्ह के आसन वास नेही न हूं तासन सीत को प्रासन कीजे ॥ केसव ईद्रिय साधि सबै मन साधि समाधि न केरसभीजे ॥ जालो मए हरि सिध प्रसिधुन लोलो विलोकि कमलो कन लीजे ॥ दे ओ कोरे नयनो लगि जे बरदा नैनन तो जियदान तोहि

मरणावस्था ॥ दोहा ॥ बसे
जो ॥ ५२ ॥
नकैसेहु मिलन जहां छल बलके
सबदास ॥ पूरनप्रेमप्रलापतेंमरन
होय अनयास ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ मरन न
केसबदासपैनरन्यौंजायनमित्त
अजरअमरजसकहतहेकैसेप्रेत
चरित्र ॥ ५४ ॥ रति उपजेरमनीयके
गहलैकेसबदास ॥ तिनकोंआगेत
देखितियकरतसुप्रेमप्रकास ॥ ५५
आतिआदरअतिलोभतेंअतिसंग
तितेमित्त ॥ साधनहूकोंहोतहेकेस
व चंचलचित्त ॥ ५६ ॥ सुभगदसादस
मेकहीउपजीपूरनराग ॥ जिहिविधि
उपजैमानमननवरनहुसुनहुसुभाग
अष्टमरुचिरप्रभावमें ॥ दोहादसहैअ
ठ ॥ इकतीससवैयाघटअधिकसुनि
गुनिपढ़तपाठ ॥ ५८ ॥ अठाईसीओर
इकईससवैयाघटअधिकसुनिकेग
निलेहुअदुतपाठहेसताईससवैया
गुनिलेहु इतिटीकाकेदोहाबात ॥ ॥ इ
तिश्रीमन्महाराजकुमारईदजीत
विरचितायांरसकप्रियायांअष्टम
प्रभाव ॥ ८ ॥ अथमानवर्णनं ॥ दोह

पूरनप्रेमप्रतापतेंउपजिपरैअभिमा
न॥ताकीछबिकेछोभसोंकेसोक
हितमान॥१॥प्रगटहिप्रियप्रतिमा
निसोंलघुगुरुमध्यममान॥प्रगट
हिप्रियपयानुप्रतिकेसवदाससुजा
न॥२॥आनिनारिकोचिहनलखि
अरसुनिश्रवननिनाव॥उपजतहै
गुनमानतहिंकेसवदाससुभाव॥
३॥सवैया॥आजुमोपैवृषभानुकु
मारिकेनंदकुमारविजोगबितेके॥
रूपकीरासिरसप्रासकेसवहासवि
लासनिरासरितेके॥नागेनभीतरि
देखिहियेनखनैननिवापरहीसुयते
के॥फूलहिमेप्रमभूलिमनोसकुचेस
रसीरुहचंदचितेके॥४॥प्यारीजुको
प्रछन्नश्रवनगुरुमान॥सवैया॥
रूसतहैवेगोपीगुपालतेंहीं॥आज
कछुहसिकेगुनगावहिं॥ऐसेमेंका
हुकोंनारिसखीकहिकेसधोआयोक
ह्योदजिनावहिं॥घातघवावातिही
जुबीरीनरहीमुहकीमुहहाथकीहा
थहिं॥आतुरहेउनआँखिनतेंअसवा
निकसेंअसवानिकेसाथहिं॥५॥रा
धिकाकोगुरमानप्रकास॥दोहा॥ ८०

लोक लोकई लै धिति यप्रियाकहै सो
बैन॥ उपजि परै गुरुमानत ह प्रीतम
के उरऐन॥७॥ आपने सों आपने ही
आगे कहियत कि धों सोरि कै बजाने
सोरीन मे बोलियत है॥ दीठी जै तै
रा कियती जैर कहो जाय कैसो आ
रकहा नैन लै छुरीन छोलियत है॥
वेद घनस्याम जैनि विनु घनी घरनी
नु घरी कै मेघ नै घनसार बोलइतु है॥
बोलती हो के सै जैसे बोलो जैसे
बोलियत मालहु लियसो ऐसे बो
लबोलयतु है॥८॥ प्रछंन गुरुमान
लक्षको॥ ऐसी ऐसी रतिराचे सोह
नी के साचे स्याम दे सो आनि बांधि
के धो कोन कीय ह चीठी है॥ सुनु हुसु
भागपाय रावरे ही मागसो हि कागद
के रूप काहु आगकी सगीठि है॥ जान
ती हों यही मघ पायो है जनमजग लो
कमें अलोकिन को बीधी तुम दीठी है
काहे को कहावत कटु कालकूट सी
यक ह्यो हरि हेरे हसि हम को तो मी
ठी है॥९॥ प्यारी को लघु मान॥ दोहा॥

सक
८१
82

देषत कांहू नारि त्यौं देषत आपनैं नैंन
न हइ उपजे लघुमान के सुने सषी यह
बैन ॥१०॥ ह्यूहै हीनरू ठियरी ईठ सोइ
ताकहा बनै कडीठ पीठि दे तईठ कों
न के अली ॥ कालि केताके सो दास
सो सो लाल लाल करैं कांहू हूनिआ
इ ग्वालि जो पैल हती भली ॥ आजहू
जबी चापरीबी चिपरि बकोमा इआन
रंग्यत्र अंगजियज्यों कनेर की कली ॥ तेरे
हीकहे किकोउ सषि है जु बूझियरी देषि
ये जु आषि सा षि बूझि बकीकाचली
११ ॥ इह लको लघुमान ॥ दोहा ॥ प्रियकौ
कह्यो करे न इहइ प्रियाकौं न ही काज
उपजत है लघुमान तहां बरनिक है
कबिराज ॥१२॥ आगे कहा कहिये अ
बहीतोइ तो दुषदी नैं। कह्यो बिनकी
ने ॥ केशव कोन हौं लाज के लाउ ते
भलिगई तो भई हित हीने ॥ भेट नहीं
भरि अंकलला भरि जी भन बोलेजु
है जुन बीने ॥ देषेन ही कबहू भरि
लोचन आजहु कैसे चले मनुली ने
१२ ॥ प्यारी जी को मध्यममान ॥ बोलि
ज्यो आये त्यों बोलहैनां हिन मोतेक

सुने

हा कछु रूकि ति हारी ॥ के प्राव के सेंह
देषे [illegible] बिन जाने कहा कोई जी की
पियारी ॥ सीरि सिराय न जो न ती खाय
नईयह भू ष की भांति न हारी ॥ काची
ही दाष छिचाह तचाख्यो सुक्यो तित उ
तु मकुं ज विहारी ॥ २३ ॥ राधिका ॥ म
ध्यमान ॥ दोहा ॥ बात कहत त्रियर्ई रसों
देषे के सो हास ॥ उपजे मध्यम मान रि
स मान नि के स विलास ॥ २५ ॥ ज्यों वन
को तू न का वत मो हि त्यों आय न का
वत है गरई ॥ अब याही ते तोसो ह बा
त कछू कहिवे ह कि तो न कहा परई ॥
कहि के सव आ पुनी जांघ उघारि के आ
पुही लाज न को मरई ॥ इक तो सब ते
हरि ये हरि हो ह व हो उ कहा हरि ते ह
रई ॥ २६ ॥ कृष्णको मध्यमान ॥ दोहा ॥ ज
हां न मान मानि नी हो रे पी यम नाय ॥ उप
जत मध्यम मान तहा प्री तम के उर आय
७ ॥ मान ही मान ते मान मन के शब सा
न स ते कछु मान करे गो ॥ मान रहो रहै
सुजि मानो न ही परि मानु न बे अभिमा
न भरे गो ॥ हे हो स ही ली स मान त बे ज
ब सो ति न मे अप मान करे गो ॥ आप म

रस॰ ८२ 84

नावृतमानहीरीवहुत्योंजुमनावन
लोहिपरैगो॥१८॥रूसकोप्रकासमध्य
मान॥ नारबारबरजीमेसारसरस
मुषीज्यौरलैदेषिमुषपारसमेबोरि
हे॥सोभाकेनिहारैत्यौंतिहारतीननै
मैकहुतूहारीसीहेनिहारिसबकाहू
कहाबोरिहे॥सुमकोनिहारोजुनमा
न्योमुभलीकरतिकेसोरायकीसों
काबजातमनमोरिहे॥नाहकेनिहे
रैकोनमानहिनिहोरतीहैनहकेनि
होरेफिरिमोहिजनिहोरिहे॥१९॥
दोहा॥राधाराधारमणकेबरनेमान
समान॥तिनकोमानमनाइबोकहि
यतुसुनुहुसुजान॥२०॥हादससबैया
मानयुतदोहादसजुनलीन॥केशव
नवमप्रभावतहसुनतरसिकपरबीधी
न॥२१॥इतिश्रीमनमहाराजिकुमार
ईदजीतविरचितायांरसकप्रियायां
नवमोप्रभाव॥९॥अथमानमोच
नलक्षणम्॥ दोहा॥ ॥मानतजै
हिप्रीतमप्रियाकहिकेशवकरिप्रीति
नरनिमुनावहसुनुहसबजीमेसुने
सटरीति॥१॥साम दानि भनिभेदपु

पुनि प्रणतउपेद्धा मानि ॥ अरप्रसंग 85
विध्वंस सुनि दंड होयरस हानि ॥ २ ॥
मानलक्षणं ॥ दोहा ॥ जो कछु कोप होय म
न माहि ये छूटि जाय जिय मानि ॥ सो
ई मान उपाय कवि के प्रावदास बषा
नि ॥ ३ ॥ नारी जी को मान उपाय ॥
के सवदास कि ये आसर है सुषकी
दुषताहि न दीजे ॥ ता हु सो रोस न मा
नियेमान न भूलि है आपनी मान
कु कुलीजे ॥ जो तुमही तुम हो सुनि
सुंदर मूरति है जिय ये कही कीजे
मान है बेधको मूल महा अपने ह
मान हे कछु ले जी ॥ ४ ॥ श्रीकृ
सि सो सपने हु मन की जे ॥ ४ ॥ श्रीकृ
ष्णको मान उपाय ॥ कहि आवत जो
न कहावती है तुम नाहि तो ताकि सके
हम सो ही ॥ ति हपे ताकहा चलिये कव
हु जिह काटे मगे पग पारि हु को ही ॥ प्री
ति कु न्हे है की जै है जई सम होत तुम्हे
गरी पसरो ही ॥ कीजे कछु व हुजा नि
के केशव हो तुम तो तुम तो हरि हो
ही ॥ ५ ॥ साधदानलक्षणं ॥ दोहा ॥ के
स व कोन हु व्याज कछु दे जु षुउावे मान

नचननरचनमोहेमनहितासोकहि
येदान॥६॥ जिहीदानतेमाननीछा
हेमानविमान॥ बारबधूकेलेदिननि
पावेतिहीप्रमान॥७॥ प्यारीजीको
दानउपाय॥ सवैया॥ कोमलअम
लदलदीनेहेकमलमलअरुनअ
रुनप्रभजूकौसुषदायये। केसोदा
सुधार ससोअधरसुधाकेधरमधुरअधरउ
पमातोइनैपायये॥ उरजमलयसे
लसीलसमसुनिदेषिअलकबलि
तव्यालआसउरआइये॥ निपटनि
गंधयहहारबंधजीवकोसचाहत
सुगंधभयोनेकगीवनायये॥ ८॥
मलगयंदनिसाथसदायंहथाव
रजंगमजंतविदाख्यो॥ नादिनते
कहिकेसवबंधनबंधनकैबहुधावि
धिमाख्यो॥ सोअपराधसुधारएसो
धिमहेयहसाधनसाधुविचाख्यो॥
पायनपूजिलेहारहियेयहचाह
तहेअबहारविहाख्यो॥ ९॥ श्रीकृ
लकोदानउपाय॥ हसतहेमत
आयआनियेकगाहगायकहू

हूकन्हाय़याकोंभाव़समुझाय़कौ॥पि
येकिअधरमधुदंपतिएकहीबार
रदनकरअघलदीजेयेबतायके
घहपरिरंभणकहावैकहिकेशोरा
यमेरीसोजोमोसोतुमराषहुदुरा
यंके॥राधिकाकीअधिकाईकहा
कहोलानैआजुआपनोपियारापी
व़आपहीमनायवे॥१०॥प्यारीजू
कोभेदउपाय॥दोहा॥सुषदेकेशव़
लषिनकहिआपुलेयअपनाय़॥त
वछुडावेमानकोंबरनोंभेदउपाय
११॥केसवधायषवासनितोहिस
षीसकुचेसबआपुनीघातें॥मोहितोम
यकहैहीननैअबनाधिदईविधितोक
होताते॥नैकहहैहरबोलचलाय़लयो
होइइपिगाडिजायमनजाते॥माषनसो
मेरमोहनकोमनुकाठसीतेरीकहैयो
बाते॥श्रीकृस्नकोभेदउपाय॥काहूक
त्याहरिलषिहैसबतेवहुविधिविनः
केवदावेसोषिसबेआपनोसोरहेबें
नमीक्षतरहेसोउपायपावे॥हावहे

६४
88

रीति इहाहरिके प्रश्न ज्यो दोह वोर ज
रै कैसे अड़ावै ॥ ४७ तौ हे पिय प्यारी
तुहारी सुमान करै कि मनावन आवै
प्रणति लक्षण ॥ अनतिहि तें अति का
मतें अति अपराध जानि पाय परै
प्रीतम प्रिया ताको प्रणति वषानि
१३ ॥ प्यारी को प्रणित हित ॥ नै वितयो
जुन सषी लई जोड़ प्रेम के के पिय पाय
गह्यो है ॥ मोहि विलोकि विलोकि अ
लो ली निअलीक अली कपवाह म
यो है ॥ ब्रजली हो सषी सीष दियें तनु
और सबै हि यहे तर ह्यो है ॥ कान्ह
ही आय मनावन लो सो हमान कि
धौ अपमान कह्यो है ॥ ४८ ॥ राधिका
की प्रणतकामभो ॥ न बोलत आप
हा बुलाए हैं बोल कैलागि मनहि वका
वहि मारन ॥ सो पयपायन सो वि
सषी सव देति हो ज्यो जुवती जि
कारनि ॥ हठ छांडि के कंठ लगाय
उठाय कहां लगि ऐठिय का सनि
हारन ॥ कौन भएन हु वो दिन ये दि

न तू ही लगी कछु उलट पारन ॥ २५ 89
राधिका की प्रगल्भअपराधते ॥ के
सो दास सुदास भई दरसाय सवैदु
ख हो भरयारी ॥ रातिमए अधराति
कहौं लौं किनो व हू वंधक वधुनि के
ल्यारी ॥ धाय रही सम हाय कछु
व सपी निहु के सिवये नस हारी
काहे ते मान्यौं न मान निती लगि
पायन जो लगि नाह पस्यारी ॥ २६
दोहा ॥ पियहि मना वै पाय परि प्रि
या पर महित मानि ॥ नाक्षपरा
धनका मते बरनत ही रस खानि
७ ॥ क्रु स्वकीप्रगल्भाति ॥ नीर हितौ बि
न मीन न सरै बरू मीन के नीर ही के
जी जै ॥ जा चित कोर सुहायिन के
भाव नाहि सुहाय सुतौ सब कीजे
जा लगि मोप गिला गिति है सुल
जी पग औ कि लगायन लीजै ॥ हो
सि सहौ ॥ आपने सपनेहु तो आव
त लाहि की बार न दीजै ॥ २८ ॥ अ
प्रउपेला लक्षणं ॥ दोहा ॥ मान सुचा
वन बात जिय कहिये आस्म सग

छू टिजाय जिह मानसौं कहै उपेक्षा
अंग ॥१९॥ राधिका की उपेक्षा ॥ चपल न
नच मचकति चमकत न प्यारन की
बोलतन मोर वेदी सुजनन साज
के ॥ जहोत हगाजत नबाजत नैद
मामादी है देतन दिखाइ दिन मनि
नी नैला जके ॥ चलि चलि चंद मु
खी सा वूरे सखा पैवेगि के सौदास
सोघ कहि आरि मुख सा जके। चढि
चढि पवन तुरंग नग गैन घन चाह
ति फिरति चंद जोधा। तम राज के
२०॥ क्रम की उपेक्षा ॥ केसो दास हि
न राति केतकी की भावै भाति जिय
मे बसत नैन नमैन ल[illegible] नी ॥
धावि कै पिये गंध सरु तन अंध क
हु सेवती सेवन कहै सेइ गंध फल
नी ॥ और हु कहति बात काहे को
जनात कान्ह ऐसे तो अस्याय
जु होइ मन मालिनी ॥ देषौ नही प्राण
पति निल जअली की जाति मालती
सो मिल्यो चाहै ती नै साथि अमालि
नी ॥ २१ ॥ राधिका को प्रसंग विध्वंस
दोहा ॥ उपजि परै भय चित भरम

मालिजातनिहमान॥सोप्रसंगविध्वं
सकविकेसवदासवषान॥२२॥स
वैया॥केकनकेसवकामकेकिंकर
वोलतडोलतदेतदुहाई॥कामनि
सायहकामिनिकोउरसाइगीताक
होहैहरिसाई॥गाजतनाहीनमेघ
घटाधुनिबाजतउजीसवीमुषदा
ई॥औरभएफिरिकीवुझवोलौ
होंबोलोऽऽबेनाले बोलकन्हाई
२३॥श्रीकृस्नजुकोप्रसंगविध्वंस॥
सवैया॥कोकनकीकारिकाकहत
काहुसारिकासोदुरिदुरिहितचित
चागनोचढायोहै॥सकरहीसकुचन
बापुरीमुकीतोकहिकाहूसोसकेन
देहुदुषनेउढायोहै॥सकरहीसुक
चनबापुरीसुकीतोकहिकाहूसोस
केनदेहुदुषनेउढायोहै॥उठिच
लीत्यावकीजेऽऽबकेमनायदीजे
नीकेहीमेकसाराकलहबढावो
है॥मानतनहितेपरउलटिमनावे
विरहऐसोइसयानस्याममुकहीपठायोहै।२४

दोहा॥ देसकालवुधिवचनतें कलधुनि
कोमलगान॥ सोभासुभसुगंधतें सुष
हीछूटतमान॥२५॥ सवैया॥ घनन
की घोरसुनि मोरनको सोरसुनि केस सुनि२
वंग्मलापग्रालीजनको॥ दामिनी ८
दमकदेषिदीपगकीदिपतिदेषिदेषि
सुभसेजदेषिसदनसुवनको॥ कुंकम
कीबासुघनसारकीसुबासभयोफूल
नकीवासमनुफूलकेमिलनको॥ ह
सिहसिमिलिदोऊआनहीमनायोमान
छूटिगयेयेकहीबेरराधिकारवनको
२६॥ दोहा॥ यहविधिमाननछुडावही
आपसमेंनरनारि॥ पलर प्रीतिवढावही
केसवदाससविचारि॥२७॥ प्रियानप्रीतम
सोंकरेंअतिहठकेसवदास॥ बहुस्योहा
यानआवही जोहैजायउदास २८॥
वारहवारनकीजिएवारककीजेमान
कहकेसवज्योंआपनेसहावैसनमा
न॥२९॥ प्रीतिविना भौहैनहीभोविन
होइनप्रीति॥ प्रीतरहैजहभौरहैयहैमा
नकीरीति॥३०॥ गवेंवसनधनत्यागतेंन
पुरबचनप्रकास॥ लालचिविसयक
रनत्रियप्रियतेहोइउदास॥३१॥ मानवि

रहनरनी विविधिजहां विविधिनु धिया ९३
स॥ किसब करूणाकरि कछु कहिय
तबिरहप्रवास॥३९॥सरससवैया
ग्रथदसदोहासब्रहजानि॥केस
वदासप्रभावदसमानमुचोहित
मानि॥३२॥इतिश्रीमनमहाराजि
कुमारईंद्रजीतविरचितायांरसक
प्रियायांदसमप्रभावः॥१०॥ग्रथ
करूणा॥दोहा॥छं॥छूटजातके
सवजहां सुषकेसकलउपाय॥उप
जिपरेकरूणातिहीप्रीतमकेंग्रकु
लाय॥१॥करूणाविरह॥दोहा॥सु
खकेंदुषकेंनरनियेयेवरंन्निबोहा
र नटविप्रसंगहिपायकछुबरनत
मतिग्रनुसार॥२॥श्रीराधिकाकीप्र
छन्नकरूना॥सवैयाछंदः॥मेपठई
मतिलेनसषीसुरहीमिलिकेमिलि
वेकहुग्रांनै॥जायमिलेदिनहीदि
गहूतीदयालसोदेहदसानबषानै
प्रेरतुपेजुकियेतनप्रानवियोगके
ग्रोरप्रियोगनिधानै॥लाजपेबोल
नपाऊंनकेशवग्रोसेइकोंकहाहुं
षजानै॥३॥राधिकाकीप्रकासकरू णा॥

रस०
८७
९५

हरितरहारहेरतिहियेहरतहारीहोह
रनिनैनीहरिनकहोलहैं ॥ बनमाली
ब्रजिपरिबरसतबनमालीबनमाली
दूरि दुष केसव केसेसहैं ॥ ग्राषधन
धनैस्यामसघनहीसौंहोतघनस्याम
नकेधोसघनस्यामविनक्योंरहै ॥ मै
नकरीकुलकानिमैनवसिकरिग्रानि
मैनदुषसह्योग्रालीबातकौनसौंकहौं
४ ॥ श्रीकृस्नकोकरुणाविरह ॥ जैसेमिलै
सषमध्यवनमगुंजायमनुरवनभवनु
किधोंगलिकगालकेसे ॥ मनुमिलेमि
लेनैनुकेलोचनसविलासछविग्रास
नभूलिरहेकपोलफलकसे ॥ नैनमिले
मिल्योग्यानसकलसयानसुनिग्राभिमा
नभूल्योतजिमनकीझलकसे ॥ जैसे ३
छलबलसाधिराधिकामिलनकह्योचा
हतकिधोंपयानप्रानपलकसे ॥ ५ ॥ श्री
कृस्नकोप्रकासकरुणा ॥ हेतरनायतेर
गनिपरिग्रपूरबपूरबरागरंगेपग ॥
जि केसवदासजिहांहियेमनोरथसंभ्रमवि
भ्रमभरिभयेभय ॥ नीरतरंगतरंगित
तुंगतिमिंगलसंलविसालनैकेचिय
कान्हकछुकरुनामयहैसषीनैहैंकि

येक रूएं णा बरूएणोय॥ ६॥ अथ प्रवा
सलछन॥ दोहा॥ केपा वेकोन ही
काजतैपतिपरदेसहिजाय॥ तासों
कहत प्रवाससन कविकोविद समुझा
य॥ ७॥ प्यारीजूकोप्रछंनप्रकासवि
रहप्रवास॥ सवैया॥ लकहिहैकधि
धौकबैगानहिनैदकुमारतागौन
कियोई॥ मोहि महाडर लूउरकों नर
हेलछिलेजिनकेधोलियोई॥ औसी
न बूझिये के श्रवतीहिबिचारयो जूबी
चिबिचार बियोई॥ तेरेई जीय जियै जि
नको जियरे जीव विनतवजियोई॥
८॥ श्रीराधाजूकेप्रकासप्रवास॥ कौन
के नप्रीति कौंन प्रीति माहि बिछुरति
याहक अनोषो पतिरलगाययतु है
के सो दास जतन करै ही भलिआवै हा
छिआरकहा पंछिनके पीछे धायंयुत
है॥ ऊ छिचलो आन माने काहू की बला
य जानै मानि से मुपाहिचानी ताके आ
ययतु है॥ या केतो छै आज ही मिल्यो
कि मरि जाउ किधौ आगिलागै मेरी

रस.
४८
96

मायमेहूपायियतुहे॥ ९॥ राधिकाकोप्र
कास॥ सवैया॥ कोकिलकेकेकुलाहल
हूलिउठीउरमैमतिकीगतिभूली॥ केस
वशीतसुगंधसमीरगयोउडिधीरजज्योऽ
तिनतूली॥ जामुनिजमुनिकेवचिओन्ह
कीजामनिपैनकगजसुधिभूली॥ क्योजि
यकेसेकेरवहुस्योविषसीविषमनीनि
सावनिफूली॥ १०॥ श्रीकृष्णकोप्रकाशवि
रह॥ जिनबोलसुबोलअमोलसबैअ
गिकेलिकिलोलनिमोललिये॥ जिनको
चितलोचनिलालचिरूपअनूपपियूष
सुपियजिये॥ जिनकेपदकेसवपानिछि
यसुषमानिसबेदुषदूरिकिये॥ तिनऽ
कोसंगिछूटतहीफलुटुरेफटिकोटिकदू
कभयोनिहिये॥ ११॥ श्रीकृष्णकोप्रकास
मयविभ्रम॥ सवैया॥ प्रेतकीनारिज्यो
तारेअनेकवटायचलाचितसेचहूघा
ते कोटनीसीककुरेकरकेजानिकेस
वसेतसबैनननाते॥ भेटतहेबरहीआ
बहीतोबरायगईहैसुषेसुषसाते॥ के
सीकरोकहिकेसवहूस्योनिसिलाय
कियोमुहराते॥ १२॥ प्यारीजूकीनिंद्रा॥
आएतेआवेगीआसिनआगेहीडोलत

हैमनैमोललईहै॥ सोतनसोवन
देउनज्योतिबसोबनमेंबनिसधि
टईहै॥ मेरीयेभालिकहाकहौंके
सवसोतिकहुतेसहेलीभईहै॥ स्वा
रथीहीसकोहितहैपरदेसगयेहरि
नीदोगईहै॥ १३ ॥ श्रीक्रिस्नजूकीनि
द्रा॥ केसवकैसीहीकोरिउपायन
आनिसूतोंउरलागतिहै॥ चकचौंधति
सीचतिवेचितमेंचितसोंबतिहोमहि
जागतीहै॥ परदेसपियापलमोहिप
त्यातिनजानेकोयाकी। कहागतिहै
तजिनैननिनींदनबोटवधूलहुआ
धीकरातिलेभागतिहै॥ १४ ॥ श्रीराधि
काकीसषीकीपत्रीश्रीक्रस्नसों॥ ६
केसावकुवरिव्रषभानकीकुवरिब
नदेवृलाज्योंबनउपबनविहरतिहै
कमलाज्योंथिरनरहतिकहूयेकठौर
कमलानुजाज्योकमलनितेजरति
है॥ कालीज्योंनिकेतकीकेफूलरुचि
सीताजूज्योंनिसचरमुषचंददेषेहीड
रातिहै। बदनउघारतहीमदनमुया
घनही। द्रोपतीज्योंनावमुहतैरोइर
टतिहै॥ १५ ॥ क्रस्नकोराधिकाकीसषीकीप
त्री

रस॰
४॥
98

भवर ज्यों भवति बन बीथकानि हे सनि ज्यों मद दुलमन्ना लिनी की मालिकाव हति है॥ पीडे२ रटति र हत चितचात की ज्यों चंदचिलेच कई ज्यों चुप हरि ति है॥ हरिनीज्यों हेरति न केसरि केका ननि ही के कासुनि ब्याली ज्यों विक लतास हति है॥ केसव कुंवर कान्ह बिरह तुम्हारे असी सूरति न राधिका की मूरति गहति है॥१६॥ श्री कृष्ण की सषी की पत्री राधिका को॥ टोरघ दरीन बसे केसोदास केहरि ज्यों केसरी को देषे ब नकरि ज्यों कपत है॥ बासुर की संपति उलूक ज्यों न चितवत चकवा ज्यों चंद चिते चोगुनौं चपतु है॥ केके सुनि व्या ले ज्यों बिलात जातु घन स्याम घन न की घोर सुनि जवासे न पै तपत है भोंर ज्यों भवंत बन जोगी ज्यों जग ति है नसा कत ज्यों स्याम नाम तेरोई जपतु है॥१७॥ दोहा॥ केसोदास प्र वास को कह्यो स्याम ते साज॥ राधा हरि बाधा हरन बरने सषी समाज॥ १८॥ एकादसै प्रभाव मे दोहा तीन रदो ष॥ दुसह हस बैया पंच दश केशव गने

99

जुहोय ॥२५॥ इति श्रीमन महाराजकुमार ईंद्रजीत विरंचितायां रसकप्रियायां एकादशो प्रभाव ॥११॥

अथ सखी सज्जन वर्णनम् ॥ दोहा ॥ धाय जनी नायन नटी प्रगट परोस नीनारि ॥ मालनि वरइ निसिल्पनी चूरहेरनी सुनारि ॥१॥ रामजनी संन्यासिनी पटपट वाकी बालि ॥ केशव नाइक नायका सखी करहि सब काल ॥२॥ धायको बचन राधिका सों ॥ मोहन साधक हानि सह्यो सरहे सलरं जाहि केमिलिवे नठी ॥ केशव क्यों ही सुनै महतारी तो राखिहै री घर ही महपेठी ॥ हो सिषवो सुष देसषी तो हितै मोंह चढायकै डीठि अमेठी ॥ को न लहै तिसलछन कोपै तुहा कछु जानि अकास अमैठी ॥३॥ धायको बचन कृष्णसों ॥ धोरीसी सुदेस बेस ही घुनयन के सगो रीजिसी गोरी भोरी भवजकी सारीसी ॥ साचे कीसी ढारी अति सुछम सुधारी कटि केसोदास अंग अंग लाइ कै उतारीसी ॥

रस॰
५०
100

सोंधेकी सी सोंधी देह सुधा ज्यौं सुधारी
पाउँ धारी देव लोक लै कि सिंधु ते सुधा
रीसी ॥ ग्रा जु घासो हासि बोलि बोलि
चालि लेहु लाल का ल्हि ऐसी ग्वालि
ग्वाई काम की कुमारी सी ॥ ४ ॥ जनी के
वचन ॥ कृष्ण सों ॥ सवैया ॥ ऐसी बोले ऐ
सी हीं धों कैसे ही कही परत जाकी मति
गति लाज पाट ज्यौं पलेटी है ॥ मेरी ही
न आवै मेरी बीर ये तो बीर वे तो जान
न हू धाय हू के साथि लोट लेटी है ॥ जैसे
सोता है चेतन की चेरी वाकी के शोराय
जे सौ तुम हाहा करि पायँ परि मेटी है ॥
जानि तहाँ नंद जू के बेटा हू जू जानों बोलि
वे इतो बताहि वृषभान जू की बेटी है ॥ ५
जनी को वचन श्री राधिका सों ॥ सोभा
को सघन वन मेरो घनस्याम निसि नई
नई कचि तन हेरत हिरायये ॥ केसो
दास सकल सुबास को निवास करि
विविधि विलास हास त्रास विसराययै
ई परसु के लकुमय फूल रस मीठो है पियू
ष हू की पैली ठाे है जा की निय राययै
चोरी चोर नैननि चराय सुष कोन जा
तो पिय मन माहि मन मेलि न चराययै

नाइनको बचन प्यारीसों॥ अबहीं तो गयेपुनि पौरिहू लौनपे बोलन आ हिरीपी छेहींलागे॥ करिहे तनकेसी परायेठाढहिहे हेकछूनिसि द्योस के जागे॥ जौनरह्योपरे केशव केसहू देषतहीं सुष स्यामसभागे॥ तो दली होजानि केयौराषतिकाहि न आरसी ये करि आषिन आगे॥७॥ नाइनके

बचनश्रीकृष्णसों॥ वडीजियलाज वडोजियआलीवडीवहूरीज्यो चले चितलीने॥ वडीवडीआंषिवडीछवि सों चितवडीवरवडोसुषदीनै॥ वडे होबिचारवडीहूचिकेशव क्योंहीमि लेतामिलेहमहीने॥ वडोनहूसोतो वडोदुषवाले ईतेवडेमानवडोमन कीने॥८॥ नटीको बचन प्यारीसों॥ जोहुदिषावनतोहिंगेहरी तोमेरीघी वजहीफिरिमाई॥ आजुलगीवहू है वांकिछिषिसाधुदिषाऊंगीजा सुनावे हक न्हाई॥ देषतेंसीरीहेजानभंटू अनदे षेजेरे सुहेंसुधिकाई॥ रातिकीबे गतिद्योसकिंयेअबहीतरीबात निवाजेहिमाई॥९॥ कृष्णसोन 101

र.स॰ ५२
102

टीबचन ॥ जैहीजैंहीदुरेजहां ज्हौंनसी
जगमगेकैसेहू जो केसावदुराउलियेरं
गकी ॥ पवनकेपंथआलिआलिआ लि
नकेपीछेआलिअलिन ज्यो लागिफि
रे जिन्हेसाधुरंगकी ॥ निपटआमल
वहेतुम्हेमिलिबेकी आसकैसे कैमिला
उं गतिमोपेनबिहंगकी ॥ एकतो दुसह
दुषदेतदूती दूती दूजी बिसबिसेबिस
वासभईबाकेअंगकी ॥ ९ ॥ परोसनिको
बचन ॥ राधिकाको ॥ पायपरेपलिकाप
रसो सुलगीरतितोल नमोलरलोहोसो
हकिधेमोहसोहोकियोअवलोतुमपे
गातिअसीनतीहो ॥ केसवकैसेहुदेषनको
आबभोरहीभोरहेआनदतीहो ॥ पानषवा
वतीहितिनसोतुमरातिकहासमरातिहतीं
हो ॥ १० ॥ पारोसनिकोबचनश्रीकृस्नसो ॥
हासीमेजातकुवासोंकही हसिबेहुकसो
बैन सुतौकरि लेव्यो ॥ आंषिमिलीन
मिलीसषियांमिलिबोइसुकेसवकेयो
अवरेष्यो ॥ विचायमेरे चुपसाधेकि
चातकस्यातिसवेही अवेसुविसेष्यो
आजहीकेसोनहेआवलहोजिहआ

103

गिलगे हू कमगन देष्यो ॥ ९२ ॥ मालनी
को बचन प्यारी जी सों ॥ दूरि है कैसी म्र
गन बसन दुति जोबन देह ही की जो
ति होति द्यौस ऐसी राति है ॥ नही को
सुवास लगे है ही कैसी केशव सुभाव ही
की बास भौर भीर फारे षाति है ॥ देषि ते
री मूरति की सूरति बिसरति है लालन
की द्रग देषिबे को ललचाति है ॥ चा
लि है कैसी चंद मुखी कुचन के भार भ
एक चनि के भार ले लाचकि कटि जा
तहे ॥ ९३ ॥ मालनी को बचन सषी सें सष
सों ॥ घेरो जिन माहि घर आनंद हू घन
स्याम धरि के मेला गी उर देषि वा ज्यों दा
वैसी मिनी ॥ यकोउ ऐसी आवै इत बन है
सु बह ब्रषभानजू की बेटी गजगामि
नी ॥ आदि ल कोग्पायो ऐतें आड बनि
बनि जाउ आवत है वेई बनी आइ इहा
रू कामिनी ॥ कां मके उरनि तुम कुं आ
ह्या के शोराय भौरन के भैं न गहै तोउ
निभामिनी ॥ ९४ ॥ ब्यारि न को वचन प्यारी सो

रस-
राम
५२
104

ऐसो मन मृदुल मृणालिका के सूत के
सा केशोदास सुर ध्वनि मन न हरत है॥ रा
रचा के से बीज दंत पाठ से अरुन बोठ के
शोदास देषे दृग आनंद भरति है॥ मेरी
मति तोरी मोहि भवति भगाई ताते वूझ
ति हौं आर तो हि वूझतिउरति है॥ साधन
सी जी मनुष के जन से कतरे कहि काठ
सी कठ ठौ बाते कैसे न करति है॥६॥ बा
रिन को बचन श्री ह ससो॥ नैन बिन नैनैपे
नैकु मति ही मनीतिकैरे जानत तनु मजे
सी हजि जानियत है॥ चंचल चरित्र चित्र
चेटक चट किला दे चेर के चेतो न अभिसा
रिसो पियतु है॥ ऐकन पैपेठे करकर टरो
जनि मेउरह्यो ते केशोराय के सेलजियत है
जैसी कहु होती है ज्वालंन के चारि चोरि
चित मन मच्छा हाथि ची कावे चितु है॥७ य
सिल्पनी को बचन प्यारी सो॥ जब ही पुनि
बोलि री बोलि लगी जकमारि हौ लोउ ठौ जा
नन दीने॥ मेरी ही जानेमे इन तटी इसके
सब है कहि बकहु कीने॥ जोपे इनोदु षपा
वती होत तकेदन मीन मनो — न कीने

तौकिलछाइतहैछिनएककरहोकों
नचित्रज्यौहाथहीलीनै॥१८॥सिउ 105
रुपनीकोवचनश्रीकृष्णसों॥का
दितुरीजमपुटरहैंगीहठारकुठौरनि
जानिनजाउ॥लाजनखावतमौरे
सभाजनलागेअलोककेलाजनै
ताउ॥कोरिविचारिविचारिहकेश
वदेषहुकुरुहीतसबकाहू॥नेहहू
केफिरिलागहुसंगनिलैननिकोस
गओरनिकाहु:॥१७॥चुरहैंनकोव २
चनप्यारीसों॥मनमननमिलेकहौमि
लिहैमिलेकोंसुषमिलिहैधोदेषिहौ
बुलायकाहूबालसों॥भागिपरेमैं
हातिहीबांधिहैकितेकदिनबांधौब
लिजाउबनमालीबनमालसों॥मु
हमोरेमोरेनमरतिरिसकेमोहासमा
रहुधोमेरेकहेकमनसनातसों॥१९
चुरहेरनिकोवचनकृष्णसों॥आपन
हाजेदुषीदुबजाकोंहोताहिकहाकव
हदुषदीजे॥जानिनओरसुहाइनके
आवताहिसुहायसुतोसबकीजे॥आ

र.
५३
106

गनबडेजुरचितुमसोंवहतोबिरचायकहे
कहाकीजे॥ औरिसैजायतोजेयेमन्ना
वनतातोहोनेनसिरायधोपीजे॥२०॥
सुनारीकोवचनराधिकासों॥ लोलने
असोलनकटाक्षकिलोलनअलोलनकसे
पटखोलनहेफेरे॥ पानपिसोआतिपनो
रमालविशालबेनेमनभावतमेरे॥ के
शवचीकनेचोगनेचाखेचितकेभयेह
रिन्यायनचेरे॥ सोचसकोचनश्रीपतिरो
चनधीरजमोचनलोचनतेरे॥२१॥ सु
नारीकेवचनश्रीकृष्णसों॥ हासीमेह
सतेहरिहेरकेजुकतिमनहरिकेहसति
हरिहियेअनुरागीहे॥ प्रेमकीपहेलीगू
ढजानतजननतहोआजअधरातिकोजो
मेरसंगिजागीहे॥ भावतीहारावहकहूं
हीलेकेशोरायकामकीकथानककहुकी
नदेनलागीहे॥२२॥ रामजनीको॰प्या
रीसों॥ कोमलअचलवेतोअमलकम
नदलआतिस्यामघननबीनीलकसे
पातहे॥ सदासाधसुधवेतोकुटिलक
रमवेतोकेशवपरमचोरमरमकिरात
हे॥ पारहेमकरिलंबकेसहुनपायेहतु

107

आरा अठि लालि ए तो भ्राति अठि ला
लहे ॥ बरजाति केयो नते होकु बकोक
हलमरे मोहनके मने तेरे नेन छै
छै जातहे ॥ राम जनी को बचन
श्रीहरि सौं ॥ कोन हु लोक कहा भयो
के प्रान कामनि कोटि कसो हितु ठाढे
रे बक साधन सवे सपकी बिनु राध
केआधा कुलोचन डाटे ॥ बयो मलि
सीतल बालु केरे सुषमोर सबी घनसा
रके साटे ॥ लालन तुहारह रहे बृंदा उना
हाये प्यास बुझायन आवके चाटे ॥ २५
सन्यासिन को बचन प्यारी सो ॥ नछू
टि हे छुदाये जब करि हों धों केसी तब
के सोदासरम न घास प्यास मन भाति
हे ॥ घे लम लिजाय गो जुड़ाय गोन
ननमन कछुन मुहाय गोरी निसि दि
न जागि हे ॥ ताले नेन पानि हुनी सी लोत स
हित गुनी तई पजि परे रोगी चर गेसये
कहागि हे ॥ औउ सांझो उत्कउ रसं चल
उड़ा न बो लो वाउ ली हो कहू कीडी हाई
हिलागि हे ॥ २६ ॥ सन्यासिन सखी सो

सीतलहूहितिलनिहारेनवसतिवहुतुम
नतजनितिलनाकेउरतापगेहु ॥ आप
नोज्यौंहीरासौंपरायेहाथन्नजिनाथ
देकेतोअकाथसाथमेनकैसेमनुले
हु ॥ एलपरकेशोरायतुम्हेंनप्रावाहिवा
हिवहेजकुलागीभागीभपसुषभलो
देहु ॥ मजेमुहछाडेछिनिछिनिछवीले ल
लालअैसीतोगवारनिसोतुमहीनिबा
होनेह ॥ २७ ॥ पटवनिको॰राधिकासो ॥ या
हिकोमेरोगुसाइनमेपहलेमिलिहनति
याछविछेलो ॥ बातमिलेअषियांमिल
यसषियांनकीअंषिनपारिकेमेलो ॥ आ
षिनलेपियसोंमिलैघमनुलेहमिलेवग
हेहमगेलो ॥ मिलमंनमायकहाकरिहो
मनहीकेमिलेतोकियेमनुमेलो ॥ २८
पटवनिकोबचनकृष्णसो ॥ वामगेनै
नीज्यौंमोरनिहूजुलगावतिहोमुहअैसो
नहूजे ॥ सोनोयसोसुनिपीनारिहोहतो
केशवकेसहूहाथनछीजे ॥ आपगिरा
गुनजेसिषवेलईकाकैनकोकिलज्यौंकू
लकूजे ॥ सुंदरस्यामविरामकरोकिनआवै

दोहा

वकीसाधन ज्यों बिलि पूजे ॥२८॥ बेनत्रा 109
यनसु घमयनकरि कहेसषिनके कर्म
कसवकछू वरनें केसव तिनके कोविद क
म ॥३०॥ केसव है षट प्रभाव मे दोहा १ करि
तीनि ॥ बीस सवैया छ अधिक बालाबच
न प्रवीन ॥३१॥ इति श्री म न्महाराजि कु
मार इंद्रजीत विरचितायां रसकप्रियायां
द्वादसोध्यौं भाव ॥१२॥ अथ षीम षीड स
के मे बनैं ॥ दोहा ॥ सिक्षाबिनयम
नाइबोमिलिवोकरहिसिंगार ॥ जु किअ
रदेह ऊरहनौ यहतिनवोब्यौहार ॥१॥ रा
धिका को सिक्षा ॥ नाहतलेगे सुष सौतिन है
दिनना हिलेगे दुषदेह दहैगो ॥ नाहिफ्विवे
सुषदेत है केसौ नाह सदा सुष देत रहैगो
नाहीतैनाहिरी न्हाइ भलाइ भलीसि बना
ही हितैपकहैगो ॥ नाहे मैान हनिवाहब
नायलो जो हीसो नेह कहो निव हैगो २
क्रम को सीछा ॥ कुंकम उवति कुम कुमा के
न्हवाय जल नैसो धोसि रलाय याहिलाये
कहायसमे ॥ चंदन चढाय फूलि फल प
हराय भलि भाजि मा जिनें हीका जि की
नैहे प्रकास मे ॥ केसव कपर पर का हे को

र स॰
५५
110

रवावो पान जो पै मनु मगुन है ऐसी
ही विलास हैं मे ॥ तो बाहिन मनावो हरि
हा हा करि पाय परि सन ही सुषै बास बसे
जाके मुष वास मे ॥ ३ ॥ प्यारी सो विनय
जो सी ही क्यो चुप है रहि है सषी हों सहि
हो सतरा हट सो लो ॥ क्यों सरि है मिलि ब
विन ताहि तउ मिलि है मिलिये दिन जो
लो ॥ के सब कोरि करो उपचार मिले को
के हों मिलि है सुख मोलो ॥ देषियो गुं
गानि भ्यारसी ले मिलि है पिय स्यो मन ही
मन कालो ॥ ४ ॥ कृष्ण को विनय ॥ सवे
मुष के से फूले नैन दारो स्यो मदसन
जोंन विव से अधर हास सुधा सो मुधा
स्यो है ॥ बेनी पिक बैनी चित्र बेनी सी
बनाय बीर वारि है कुवारि करि हा को
करि हा स्यो है ॥ कीने के चरन मल कम
ल पल र के से फल के सो दास जाते विधि
मुधा वि चा स्यो है ॥ देषो नगुपाल सषी
मेरी को सरीर सब मानै मो सवारि म
नै मेन स्यो सवा स्यो है ॥ ५ ॥ राधिका को
मनाइवो ॥ री हारि हाय हरे षेन हा कि
रही मुष देषि दिषाय सुभाय ॥ बोलन

आपके अंगकी नीमई के सब ऐसी है मैन सुहाई
मैव हू तैं बहुराय है लोगी रीत ने हेरावति
मोहि बच्चाही ॥ ये ही सयान सदा चलि है
हरि सौं हांसि हा करि मो हि सो नाही ॥ ६ ॥
रूपको अनादरबौ ॥ भूषन भेद बनायके
कफल वफूल बनाय बनायके बागे । भाग
बढाय सुहाग बढाय के राग बढाय हिये
अनुरागे । पायन लागत सो धो लगावत
पान घवावति ही निसि जागे । कान्ह च
लौ उठि बैठि कहा मन मांसि पराये बास
न लागे ॥ ७ ॥ राधिकाको मिलिबो ॥ जो
हैं गने आगन नितोल गुन गन गनै जो
है गने गुन तैतौ आगन कहुं नेम के सो स
न ऐसी प्रीति छिपावती छलानि मे जैसे
लए छबि छूटि छिपै छिपे घन मे ॥ भारी है
निठुर निस भादु की भवान मे सु कैसो बसे
घरे जाको पीव बसै बन मे ॥ बैठे ते उठावै
उठि चले ते मस चालि रहे सोइ मेरी कैधौं न क
हौ जो ह तेरे मन मे ॥ ८ ॥ रूपको मिलिबो ॥
सिंघे हार सिस पीडर बाय हारी कादिवनी
दामिनी दिखाय हारी दिसआधी राति की

धु किर हारी रति मारि मारि हार्‍यो मार
हारि फ़ कहोर नत्रि विधि गति बात की
दई निरदई काहि दई ऐसी काहु माति जा
रत जुरै नैनैनि दिह ऐसी गात की
कैसे हू न मानै ही मनाय हारी कैसो रा
य बोलि हारी को किल बुलाय हारी चा
तकी ॥९॥ राधिका के सिंगार ॥ दी
नो मे पायन जाय महावर अंजी मै खंज
न आंखि सुहाई ॥ भूषन भूषित कीनो
मै के ग्राव माल मनोहर मै पहराई । दर्पन
लै अब दीपत देषि सषी सब अंग हि गा
सिधा र बनाई ॥ वंक विलोक नि मंक लै पान
षवा दै को कान्ह कुवार की नाई ॥१०॥
...की सिंगार ॥ पाघ बनी अरु वागो
वन्यो वटु वापटु का कटि राजत नीको ॥
स्धो वन्यो अति चार चटावत हार वन्यो
र भावतो जी को ॥ बीरा बन्यो मुष षात
मनोहर मोहि सिंगार लग्यो अति फीको
भाल भली विधि जो लौ गुपाल कि योई
हि बाल बनाय के टीको ॥११॥ प्यारी को
रुकिवो ॥ फिरि फिरि पेष्यो मे हरि को
मन नमन मच्यो फिरि पुनि भाग की भली घ
री ॥ पल २ पायन परति हुती जिनके

कैंसुष्पकारीपियतेरे पायपीके पायहूप
री ॥ वहीनकी बेटीनिंकी बडीयेबब
आय मेटिके सोदासबडीनिपुनमेजू
नूबडीकिरी ॥ हौतोजानोंमनायेतौं
नि मेरे गुनमाँहिमेयाहीकोमनायफिरि
मोहिकोमनीधरी ॥ २२ ॥ दो॰ छप जू का
गु कि बो ॥ तासोंबसायकहाकाहिकेश
वकोमनलालमेलेदुरेहैं ॥ विधिकीलि
पिलोपीनजायमनलोकिकलैमपिसी
सभुजोगदेई ॥ आपनोमुहदेषहूआर
सीलेंहूपुनिबातकहेपरिमानलई ॥ व
षभानसुतापरिओरसुहागनिवाहो
अहागिलिजीभगई ॥ २३ ॥ राधि का के
ई रोह नो ॥ केशोदासकैंननंदीरूपकुल
कानियेअनोषोएकतेराहीअनेषउर
वोलिए ॥ आपनेसमानकाहूमानैंन स्या
मानेतू गुमानकेविमानबेठीव्योमव्योम
डोलिए ॥ गेडसोंओडायआनिअंचलई
आय जैसीछाडीगेडवेठीचितवचिति
रमोलिए ॥ हीनोमनहाथिजिहंहीए
सोंहरिषकेताहरिसोंहेरिननेनीहेरे

५७
114

हुतोनो लिए ॥ २४ ॥ अथ सकोउदाहरनं ॥
मोहे नकोमोचनसकोचकाहूवीचि
कीकोपाछोप्यारे पीकेपोचुलोचन
कनारकी ॥ सारीकी हैथोरीथोरी मोहे
सुधिजानितिउ है कि सारीजोरी है जु वा
रकी ॥ मोरीयोकुमति मोरकहाकहों
केसोदाससलागतिलाज [illegible] गोलई
हारा विधारे की ॥ एती है सुठहि वहे म
व हीयुठाई न हे छारहु तो छुटी नांहि पा
घनके पार की ॥ २५ ॥ सवैया ॥ आधीऽ
सीधायहै सायदबरसिदासिन केदुघट
हद ई है ॥ तापके तूरतमारनिमालनि
नाथिननाह के नेहनहीहे ॥ तेरी सो
मरीसखीसुनि तरीसके लीकी आसर
हीहे ॥ कान्हसिन्नाथ के माहिं नपाई है
आपने जीकीमतोसों कहीहे ॥ २६ ॥
दोहा ॥ इहविधिस्यामसिंगाररस बहुवि
धिबरनोजोय ॥ च्यारिबरन चहुआश्र
महि कहत सुनत सुख होय ॥ २७ ॥ रसक
सवैयापित दस्यादोहा कहे जुतीन ॥ औ
दसकसप्रभाव के केशव बर्नि प्रवीन
२८ ॥ इति श्री मन्महाराजकुमार

115

ई इजीतविरंचितामोरसकप्रियायां
त्रयोदशप्रभावः ॥ १३ ॥ अथ हास्यर
सवर्नन ॥ दोहा ॥ नियवरनैकछुकेरत
जव मनकोमोदैउदोत ॥ मधुरवितैपहिचानि
यतहीहास्यरसहोत ॥ १ ॥ मंदहासकलहा
सपुनिकहिकेसवअतिहास ॥ कोविदक
विगवरनहूसबैअरचो घ्यापरिहासु ॥ २ ॥ विक
सेहिनैनकपोलकछुदरसनमनकेबास
मंदहासतासौंकहत कोविदकेसोदास ॥ ३ ॥
ब ' रनतवाढे ग्रंथवहु कहेनकेसवदास ॥
औरसबोइनजानियेसबप्रछन्नप्रकास ॥ ४ ॥
प्यारीकोमंदहास ॥ सवैया ॥ जानेकोउपा
नघवावतिक्यौंहोगईलगम्यांगलीउठनवी
नै ॥ लैचितयो' लबहितिहभांतिजुलालके
लोचनलीलसेलीनै ॥ बातकहीहरियेह
सिकेसुनिमैसमुझीवैमहारसभीनै ॥ जान
तहौंपियकेहियकेअभलाषसबैपरिपूर
एकीनै ॥ ५ ॥ कृस्नकोमंदहास ॥ दसनवस
नमहिंदरसैदसनदुतिबरसिमदनरसक
रतिअचेतहो ॥ छायजलकतिलोललोचन

कपोलनि मे मोलिले न मनक्रमवचन
समेतहैं ॥ जो है कहै देत भावकहौंमे
री भावती के भावती छबीलेलालनमें ।
नकौन हेत हौं के सब प्रकासहा सहसि
कहालेहु मेजेसी हुतो हसमै ते हियनि
हरिलेतहो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कलहासलछन
दोहा ॥ यह सुनि एकल धुनि कछु को
मलविमलविशाल ॥ केशव तन मन
मोहि सब बरनो कवि कलहास ॥ ९ ॥
प्यारी कलहास ॥ कोऊ सिता सित
काछिनी केशव पातर ज्यों पुतरीन विचा
रे ॥ कोटि कटाछिन चै बहु भेदन साच
तनाइ कमेदनि न्यारो ॥ बाजत है मड
हासमद्रंगमृदीपति दीपनि कौं उजि
यारो ॥ देषति हैं हरि देषि तुम्हे यह हो
त है ना खिन मांझि अंध्यारो ॥ १० ॥ कृष्ण
कौ कलहंस ॥ जैसी २ विधि राचै सो हनि
केसा चे स्याम दे चाञ्चामि बांचि किधौं
कौन की यह चीठी है ॥ सुनु हरि सु भाय पढ्य

रावरी ही पागमांहि कागदकेरूपका 117
रु आगि की आगी ठीहै ॥ जानतीहौये
ही भग पायो है जन मुजगिलोकमेक
लोकन की वीथीनुमदीठीहै ॥ काहे
को कहावत कटुक काल कूटसीयेक
ह्यो हें सेहरे हसि हमेकों मीठीहै ॥ ८८

इतिहासलक्षण ॥ दोहा ॥ जहां हसेनि
सेक हू प्रगटहि सुषकी बास ॥ आधेआधे
बरनिनपद उपजियेरे आतिहास ॥ ९० ॥

प्यारीजूको अतिहास ॥ तेसीयी जगतिजो
तिसीसुसीसफूलनकी चिलकनु तिलक
तरूनितेरे भालको ॥ लेसीयेबदनदुतिद
मकतिकेशोदास तेरीयेलसतलाल कठ
कठमालको ॥ तेसीये चमकचारु चिबुक
कपोलनकी झलकलतेसोनकसोतीच
लचालको ॥ हेरे हेरे हसिनैक चतुरिचप
लनैनी चितवतचककोधी मदनगुपाल
को ॥ ९१ ॥ श्रीकृष्णको अतिहास ॥ गिरिर
उठिर रीझिरलागेकठ वीचिरन्यारोहोत

छबिन्यारी न्यारी सी॥ आपस में अकुलाय।
आधे आधे आखरनि बोलत हसत नीके
आछी यक यारी सी॥ सुनत सुहाय सब स
मझि परै न आव केशोराय की सौ दुरि देषो
हरि प्यारी सी॥ तरुनि तनै या तीर तरवरु
तीर ठाढ़े तारी दै दै हसत कुवर कान्ह प्यारी
सौं॥ २२॥ अथ परिहास॥ दोहा॥ जह
परिजन सब हसि उठै तजि दंपति की का
नि॥ केशव कौंनहु बुधिबल सो परिहास
बषानि॥ २३॥ आय है एक महाबनिते तिय
गावती मानो गिरा पग धारी॥ सुंदरता जान्यों
कामकी कामिनी बालक हो वृषभानदुला
री॥ गोपी के लाय गुपाल हिये अकुलाय भि
ली उठि सादर भारी॥ केसव भेटत हि हरि त्यों
कहसी सब कू कदे गोपकुमारी॥ २४॥ अथ
करुणरस वर्णनम्॥ दोहा॥ प्रिय के विप्र
य करन ते आनि करुणरस होत॥ केसव ब
र्णि बषानिए जैसे तरुण कपोत॥ २५॥ झूठे है
भौंह चढाय चितै डर पाय यै के मन क्यों हू
करेरो॥ ताको तो केशव कोटि हिये दुख हो
त महा सुकहौं इहत तेरो॥ केसौं है तेरो हियो

हरियेहरिहीछाड्योनहीतनछूटतमेरा
तूहकदूधकोमाख्योसुबांधिसुजानतिहों
माइजायोनतेरो॥१८॥प्यारीकीकरुणा
नेत्रसोरसअपारचंद्रमासेसुकुमारसंभुसे
उदारमातिअधीरतहे॥ईद्रजुसेप्रभुपूरेरा
मजूसेरणसूरेकामजूसेरूपपूरेहियेहरि
यतहे॥सागरेसेधीरगणपतिसेचतुर
मातिऔसेअबवेकदिनकैसेभरियतहे
७॥कृष्णकीकरुणा॥चंपेकीसीकलीभ
लीकेसवसुबासभरीरूपकीसीमंजरी
मधुपमनिभायये॥देवकीसीबानीआः
तिबानीसीसयानीदेवराजाकीसीरानी
जानिजगसुषदानिये॥कामकीकलासी
चपलासीकामअबलासीकमलासीदे
हधरेपूरेपुनिपाययें॥कोनेकीनेनपदकु
जातिग्वालनिऔसीयेहराधिकाकुवारिपा
सिगारसबिचाययें॥२०॥रौद्ररसलछ
ण॥दोहा॥होयरूद्ररसक्रोधमयविग्र
हउग्रसरीर॥अरूनबरनबरनतसबेक
हिकेशवमतिधीर॥२१॥केहरिकोहरि

करिकेरि मृगमीनपुनि सुकपिक खंजरीट
९० कंजवनु लीनौ है॥ मृदुल मृणाल विविचं
120 पक कमल दुति कुंकुमसों दाडिमी कौ दु
नौ दुष दीनौ है॥ जारत कनक तनु तनं
कलनकु शापि बधत घटत वंधुजीवं
घ हीनौ है॥ केशोदास मया कौ देषिं दकु
वर कान्ह राधिका कवरि कोप कौन परि
कीनौ है॥२०॥ श्रीकृष्णकौ रुद्ररस॥ मी
उ मार्यौ कलह वियोग मार्यौ वोरि के मरो
रि मार्यौ अभिमान भार्यौ भय भान्यौ है
सब कौ सुहाग अनुराग लूटि लीनौ दी
नौ राधिका कुवरि कह सब सुष मान्यौ है॥
कपट कपटि डार्यौ निपट कै न्यौतिन्यौ सामे
टी पहिचानि मन मेहु पहचान्यौ है॥ जीतिर
ति रण म[illegible] ध्यो मनमथ हु कौ मन कै
मौराय कौन कहौ रास बरवान्यौ है॥२१॥
अथ वीररस वर्नन॥ दोहा॥ होय वीर उ
त्साह मय गोर वरण दुति अंग॥ अति उदार
गंभीर कहि केशव पाय प्रसंग॥२२॥ राधि
का कौ वीररस॥ गति गजराज समाज देह
की दिवि मद मद करि हीन घनबाहन ज्यों
ईदु जैसौं जैसे तुम्हें ईदु कौं

२३॥

२४ ॥ अथ भयान करस लछण ॥ दोहा ॥
होय भयान करस जहा के सब स्याम सरी
र जाके देषै सुन तही उपजि परंत भय भीर
२५ ॥ राधिका को भयान करस ॥ सवै
भन मंडल में जितके घन घोर उठे दिवि मं

रसक
६१
122

डलमेडिगरी॥ चहराति घटा घटवानके स
घटघोषघोरहू घरीनघरी॥ दे सहू दिसके
सब दामिनी देषि लगे प्रिय कामिनी के
ठतटी॥ जमे पाश्वाहि पाय पुरंदर के ब
नपावक की लपटे झपटी॥२९॥ कृष्ण
को भयानक रस॥ रोसमे रसके बोल
बिससो सरस हो इजाने सुप्रबलपितु
रोषजि निचाषी है॥ केसोदास सुषदी
वेला इक भए उ तुम ज्यो जु लहू जीमे
जाकी अभिलाषी है॥ सधे हहू सु
धारिबे को आये सिषवनि मोहि सधेहू मे
सधी बाते मोसों वनभाषी है॥ जैसेहु मे
केसे जातु हु रिहोधों देषो जाय काम की
कमान सी चढाय मोह राषी है॥३०॥ वि
भत्स रस॥ लक्षण॥ दो॥ निंदामय विभ
त्स रस नील बरन वपु तास॥ केसव देषत
सुनतही तनमन होत उदास॥३१॥ राधि
का को विभत्स रस॥ सवैया॥ माता ही
को मास लो हिलागत है मीठो मुषपीवत
पिता को लोही ने कुनका घात है॥ भयान
के कंठ नको काटत ने कसकत तेरो हिया
के सो है जु कहती सिहातहे॥ जबजब

होतभट मेरी भटु तब तब ऐसी सो हदिन उठि बाल नधिनाति है॥ प्रेतनी पिसाचनी निसाचरी की जाय है तू के सोराय की सो तेरी कह कौन जाति है॥ २९॥ अथ कौवि भत्सरस॥ टूटे ठाठ घन घेने घमघमे सोंन सने झींगुर झौरी साप बीछु बनि घात जू कंटक कलित न तृन वलित विगंध जल तिन की तलप ताको अति तलचात जू॥ कुलि हा कुचील गात अंध तम अधरात कहि न सकत बात अतिअकुलात जू॥ छेडी मेघ से किधर र धन कौ घन स्याम पर धस्नी न प हि जात नधि जात जू॥ ३०॥ अद्भुत रस लछ ण सोहा॥ होय अचंभो देखि सुनि सो अद्भुत रस जानि॥ केसव दास विलास निधि पीत बरन बपु मानि॥ ३१॥ राधिका कौ अद्भुत रस॥ नंदि की कुमारि का बेली ने सुकि मारिका पढाइबे को कै कारिकानि के सब स बैनि बाहि॥ गोरी२ भोरी२ थोरी२ ने संपि रै देवता सी दासी देरी आय चोरी चोरी चा हि॥ विन गुन तेरी आनि भ्रं कुटी कमान तानि नयन कटाक्ष बान यह अचिरज आहि॥ 123

९२
124
खेलमानरीझ्यूं है तेरे कोऊ दीठमानपीठ
देदेमारने पे चूकतनकोऊ ताहि ॥८२॥ हा
स कौ अद्भुतरस ॥ माषन के चोर मधुचो
र दधिदूधचोर देषो नहिदेषत ही चित
चो चोरलेतहे ॥ पुरण पुराण और पुरषपुरा
णयन्हे पुरषपुराणसुक हवे कि हितेहे
केसोदास देषिदेषि सुरन की सुंदरी षे
करत विचार सब सुमतिसमेतिहे ॥ वैष्ण
वि गोप का की भूलिजात निजगति आग
तिनके सेके परमगति देतहे ॥८३॥ केसो
दास वालवेस दीपति तरुनि तेरी वानी
लघुवरनिन वुद्धि परमान की ॥ कोम
लअमल उरउर ज कठोर जाति अव
लापे बलवीर वंधनविधान की ॥ चं
चल चितौनि चित अचलसुभाउ सा वि
सके लजसाधि भाव काम की कथान की
बेचती फिरत दधिले तताहि मोलिले
तअद्भुतरस भरी वेटी वृषभान की
समरस लछणं ॥ सबतें होइ उदास मन
वसे एक ही ठौर ॥ ताही सौ समरस कहे
केसव कविसिरमोर ॥८४॥ राधिका को

समरस॥ देषैन हीन्मारि विंदनत्यों चितचं
द कीआनंद कंदनकाई। काननकाम
कष्टाकरै कामनी ताके त्रधामकों सुंदर
ताई॥ देषिगई जबते तुमकों तबतें कछु
वाहिन देष्यो सुहाई॥ छाडेगो देह जु देषे
बिनां अब हो देहुन कान्हकहु दै दिषाई॥३६
श्रीकृष्ण को समरस॥ चारिक घात न दास्यो
वृंदावन माषन हूं सहु मेटि ढिठाई॥ केसव रू
षमहू षहू दूषतआय पैतो पहि छाडि जि
ठाई॥ लोरदनछदको रसरंचक चाषिग
ये करि कोहू ढिठाई॥ वादिनतें वहि राषी उठा
यसमेत सुधा बसुधा की मिठाई॥३७॥ दनु
जमनुज जीव जलथल जिनकोप स्योहर
हत जहां काल सो समर है॥ अनत अजर अ
जन्म मै रोमरतपरिकेन्द्राद निकसि जाने सोई
तो अमर है बजतअवनसुनि समाधि शब्द
करि षंदुनको बादु नही प्रीवृको उमर है॥
भागु है रभागो भे या भागनि ज्यो भाग्यो पै
भव के भवनमाहि भयको भवर है॥३८
इह विधि बरनें रतन बहु नवरसरासि कवि
चारि॥ बाधहु वृत्तिक वित्तकी कविके स
व विधि चारि॥३९॥ नीसस सवैया साठ अ

९३ धिक दोहा सो लहजानि ॥ नवरसके सव
126 बरनिए चतुर २ दस जानि ॥४०॥ इति
श्री मन महाराजकुमार ईन्द्रजीत वि
रचितायां रसक प्रियायां वृद्धप्रभ
वा ॥ १४ ॥ अथ वृत्ति बर्नन ॥ दोहा
प्रथम कोसिकी भारती भनि आरभटी
जु भाति ॥ कहि केसव सुभ सात्विकी च
तुर चतुर बिधि जानि ॥ १ ॥ अथ कोसकी
लछन ॥ कह केवि केसवदास जहां
करुणा हास सिंगार सरल बरन सुभा
व जहां सो कोसकी विचारि ॥ २ ॥ मिलि
बे कौं एक फिरे मिलि मिलि दूति कानि मि
लि मन मन ही बिलास चित्त सति है ॥ बो
लि बे कौ एक बाले बोल सुनि बे कौ बीर बो
ल बोलती रघा निरतिन बसति है ॥ देखि बे
कौ एक फिरे देवता सी दौरी दौरी देवता म
नाय दिन दान मन सति है ॥ कीजे कहा क
मकौ इह रूप मेरी माय तैतो मेरे कान्ह जके
ब नाँहीं है ॥ ३ ॥ भारती लछण ॥ बरनिये जा मे दोहा
बीररस ये और सिंगार रस हास ॥ कहि केस
व सुभ अर्थ जह सो भारती प्रकास ॥ ४ ॥ का
नंनि कनक पत्र चक्र चमकत चारु भुज

थूलमत्तीजुत्तकतिआतिसुखदाइकेस
वछबीलीछत्रसीसफूलसारषीकोके
सरकीआड़ैआधिराधिकारचीबनाइ
नीकैहीबसनसोहैनीकोमोतीनाक
येकयेकहीबलोकैनीगुपालतेगयेवि 127
काय॥लोचनविशालभालजटितजरीषि
लालमानोचकौमीनिनिकेरषमनसय
राय॥५॥अथआरभटी॥केशवजामेरुद्र
रसभयवीछकजानि॥आरभटीआरंभय
येहपयभयजुमकबखानि॥६॥घोरघने
घनघोरतसज्जलउज्जलकज्जलकीरुचि
राचे॥फूलेफिरैइसस्सेनभयाइकेसावन
कीपहलीतिछिपावेचौहदिशातडितात
रफेरूपबनितांकहिकेसवसाचे॥जानि
मनोवजिराजविनावजिऊपरिकालकु
टुबनिनाचे॥७॥अथसात्विकी॥अद्भुत
रौद्रसिंगाररससमरसबरनिसमानि॥सु
नतहीसमझलभावभनिसोसात्विकी
सुजानि॥८॥सवैया॥केशोदासलाषला
षभांतिनकेअभिलाषबारिदेरीबावरी
नवारैहियोहारीसी॥राधिकाहरिकीप्री
तिसबतेअधिकजानिरतिरतिनाथहूके

रस· ६४ 128 दे घेरति घोरीसी ॥ तिन हू मे मे दनमवा
नी हू मे पास्यो जाय भार घमे भारथ्यी की
भारथ्यी है घोरीसी ॥ एके गति एके मति
एक प्रान एक मनु देषिवे कों देह द्वै है
मैनन की जोरी सी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ जौं हि वि
धि केशव दास कवि नव रस बरन कवि
त ॥ पांच भांति अनरस सुन्यो ताहि न दी
जे चित्त ॥ १० ॥ पंचदशे प्रभाव मे कहे सबै
या च्यारि ॥ केशव दोहा सप्त सुभ कहि को
स की विचारि ॥ ११ ॥ इति श्री मन्महाराजि
कुमार इंद्रजीत विरचितायां रसकप्रिया
यां पंचदशो प्रभावः ॥ १५ ॥ अथानिरसान्
लो ॥ प्रत्यनीक नीरस विरस कै सवदुःस
धान ॥ पात्रदुष्ट कवित्त को कैरस कुकवि
वषान ॥ १ ॥ अथ प्रत्यनीक रस लछिन ॥ ज
हां सिंगार विभछ भय बिरह बरने कोइ ॥ रौ
द्र करुण मिलत ही प्रत्यनीक रस होइ ॥ २ ॥
हसि बोलत ही जु हसे सब केसव लाज भ
गावत लोग भगे ॥ बात चला वत घेरि चलै
मनु आनत ही मनमथ जगे ॥ जो तू कहे स
कुती मन मेरहू आनि इहे हियमे उमगे
हरि त्यो न वृदीठ पसारत ही अगरी न प

सा रन लोग लगे ॥३॥ निरस लछण ॥ जहां
दंपति मुह मिलै सदा रहै इहि रीति ॥ क
पट रहै लपटाय मन नीरस रस की प्री
ति ॥ ४ ॥ गाहत सिंधु सयानन के जिन
की मति की गति देह दुहेली ॥ मोहि हसी
दुषदे इदया ई तिनहे सो जनावत प्रेम
पहेली ॥ ज्ञानी हो जानी मिली मुंह ही
हिये नाहिन भावत गर्व गहेली ॥ आज
लौ कानन हून सुनी सुलौ देषि चली ह
म सौ तिसहेली ॥ ५ ॥ अथ विरस रस ॥
जहां सोग मे भोग को बरन कहै कवि को
य ॥ के सव दास हु ज्ञा न सों तहां विरस
रस होय ॥ ६ ॥ केशोदास न्हान दास जान
पान भल्यो ज्ञान गया ज्ञान कैसो प्राणपी
ठि की सी पीठि है ॥ छाउ हु रस क लाल जक
वह बाल देषि देषत ही सब सुष नु मह्हू
वाठि है ॥ ऐसी सो बसी ठि चीठि भांति टीठि
सुनै मीठि मीठि बात नि जु नै के हु मे नाठि
है ॥ इठ न सो हू टी इठि ताकी सा ककी आगी
ठी उठि या मेउर मे सु के सी हासि दीठि है
अथ दुसह संधानवर्णनं ॥ दोहा ॥ एक हो

129

म

रस·
६५
130

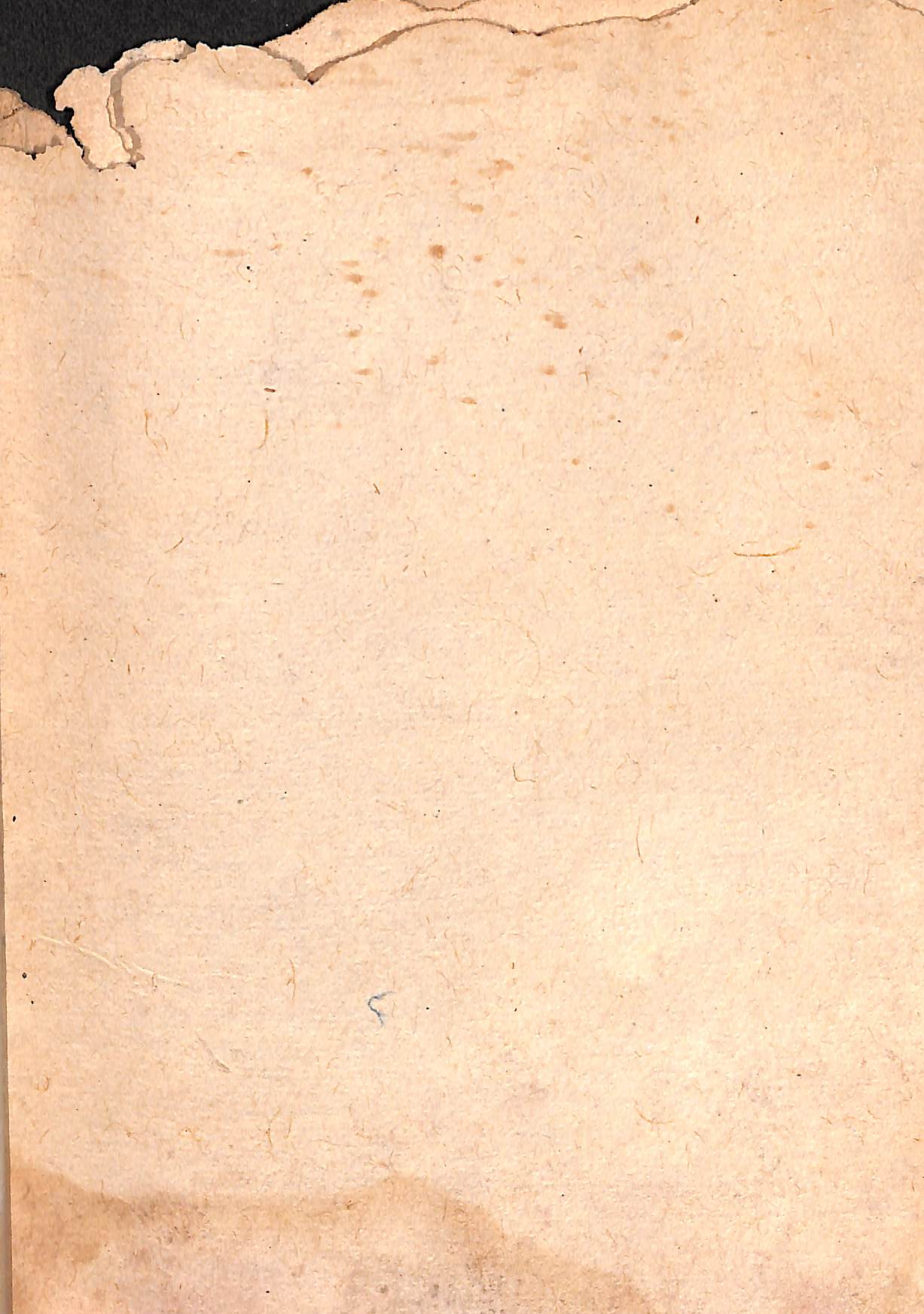
इन्ह अनुकूल जिय जाहि दूजो प्रतिकूल ॥ के
सव जहँ दुहुँ संधान रस सो मिलि हास्य ह म
ल ॥ ८ ॥ दे दधि दीनो उधारि है केशव दा
न कहा करि मोल लै वेचि है ॥ दीने बिना तो ग
ई जु गई हो इ गई न जु गोरस घर ही फिरि जै है
गो हित बैर कियो हित को न बैर कियो
बरनी के रहे हो ॥ बैर के गोरस बेचहु गी
आ हो बेच्यो न बेच्यो न बेच्यो तो ढारि न
दे है ॥ ९ ॥ पात्र दुष्ट लक्षण ॥ जैसो जहाँ न
बूझिये करिये कैसो पुष्ट ॥ बिन बिचार जो
बरनिये सो रस पात्र हि दुष्ट ॥ १० ॥ जहाँ जु
जैसे चाहिये नाही तैसो इ पुष्ट ॥ करिये बि
ना विचार जो बरनिय सो रस पात्र दुष्ट ॥ ११
कपट हरु पानी प्रेम रस लपटानी प्रानन को
गंगाजू को पानी सन मानिए ॥ स्वारथ धानि
धानी परमारथ की राजधानी काम की क
हानी केसोदास जग जानिए ॥ सुबरण ग
रु ज्ञानी सुधा सो सुधारि आनी सकल स
यानी गानि सुखदानिए ॥ गोरा हू गिराल
आनी मोहे मुनि मृग पानी ऐसी बानी
मेरी रानी विषके बखानिए ॥ १२ ॥ दोहा ॥ के

सवकरुणाहासकोध्ररुविभत्ससिं
गार॥ बरनतबीरभयानकेसंततबै
रबिचार॥१३॥ भयउपजैवीभत्सतै
अरुसिंगारतेहास॥ केशवअद्भुत
बीरतैकरुणाकोपरकास॥१४॥
जोहिविधिकेशवदासरससमानरस
कहेबिचारि॥ बरनतभलिपरीजहा
कबिलेहुलेहुबिचारि॥१५॥ जैसीरस
कीप्रियाबिनादेखियेदिनदीन॥ त्योंही
भाषाकबिसबैरसकप्रियाबिनहीन
१६॥ बाढैरतिमतिअतिबढै जानैसबर
सरीति॥ स्वारथपरमारथलहैरसकप्रि
याकीप्रीति॥१७॥ बारहदोहाबरनियेपां
चसवैयाचारु॥ षोडसवैप्रभावमहि
केशवचारुविचार॥१८॥ इतिश्रीमन
महाराजकुमारइंद्रजीतविरचिता
यारसकप्रियायांषोडसोप्रभावसंपूर्ण
रसकप्रियासंपूर्णम्शुभमस्तु॥ १६॥
षट्सवैयारसभरेससिबेसुलोचन
कीन॥ व्योमबेदहंगदोहरारसकप्रिया
करिलीन॥१॥ शुभं॥ रसकप्रियाकी

131

प्रियाप्रीतिरसरीतिवढतआति॥ अद्भुतप्रे
मप्रबंधअवन मुनिमुमति अधिकरति। दो
से सातरसतरि रचेरसरासि सवैया॥ दो
हा दोसे च्यारि अधिक सैं तीस सवैया॥ च्या
रिच्यारि छप्पै कवित लिखे जुगल कप्र
माण करि॥ के स वृ दास समदाय भनि सो
निरौं कारि अंत धरि॥ २॥ संवत १८ ८७
शाके ७ ५२ माघ कृष्ण ९ भौमे लिखितं
दीपचंद जोसी लिखाइतं धर्ममूरति गोत्रा
ह्मण प्रति पालक कवरजी लाला गोविंद
लाल शुभमस्तु॥ निरायनपुरमध्ये लिखी










३३।
२॥